पवन खेड़ा के पास दो-दो वोटर कार्ड, अमित मालवीय ने किया बड़ा दावा, कांग्रेस नेता का आया जवाब

नई दिल्ली। राहुल गांधी के वोट चोरी के दावों को लेकर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) और कांग्रेस के बीच चल रहे वाक्युद्ध के बीच, भाजपा आईटी सेल के प्रमुख अमित मालवीय ने मंगलवार को बताया कि कांग्रेस नेता पवन खेड़ा के पास दो सक्रिय ईपीआईसी नंबर हैं। उनके मुताबिक एक जंगपुरा और नई दिल्ली विधानसभा क्षेत्रों में है जो क्रमशः पूर्वी दिल्ली और नई दिल्ली लोकसभा सीटों के अंतर्गत आते हैं। मालवीय ने राहुल गांधी पर उनके वोट चोरी के दावों को लेकर हमला बोला और चुनाव आयोग से आग्रह किया कि वह इस बात की जांच करे कि पवन खेड़ा के पास दो सक्रिय ईपीआईसी नंबर कैसे हैं, और क्या उन्होंने कई बार मतदान किया - जो चुनावी कानूनों का स्पष्ट उल्लंघन है।

बहुजन हिताय! बहुजन सुखाय!

सक्षम भारत

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक | इन्द्रजीत सिंह, मुख्य संवाददाता/सचिव, CNSI-Delhi

दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश से प्रसारित

www.sakshambharat;net, E-mail : saksham.bharat@hotmail.com

Member : CENTRAL NEWSPAPER SOCIETY OF INDIA DELHI

● वर्षः 23 ● अंकः 221 ● नई दिल्ली ● बुधवार 03 सितम्बर 2025 ● प्रभात कालीन ● मूल्यः 3 रूपया ● पृष्ठः 4

रिपब्लिकन
मजदूर संगठन
के सदस्य बनें
E-mail :
rmsdp@hotmail.com
अनागरिक गीता भारती भवन
बी-2/370, सुल्तानपुरी
दिल्ली-86

मराठा आरक्षण पर सरकार ने मानी जरांगे की आठ में से छह मांग, कुनबी प्रमाणपत्र के लिए बनेगी समिति

मुंबई। मराठा आरक्षण आंदोलन को लेकर महाराष्ट्र सरकार और आंदोलनकारी मनोज जरांगे पाटिल के बीच बड़ी सहमति बनी है। सरकार ने जरांगे की आठ में से छह मांगों को स्वीकार कर लिया है। इनमें मराठों को कुनबी प्रमाणपत्र देने की प्रक्रिया तेज करना, गांव स्तर पर समिति बनाकर पुराने दस्तावेजों की जांच, 1961 से पहले के भूमि अभिलेख उपलब्ध कराना और पात्रों को ओबीसी में आरक्षण का लाभ देना शामिल है। सरकार के जीआर जारी करने के बाद जरांगे ने इसे बड़ी जीत बताया। जीआर जारी करने के साथ ही सरकार ने मराठा समुदाय को कुनबी जाति प्रमाणपत्र दिलाने की प्रक्रिया को आसान बनाने के लिए गांव-स्तरीय समितियां गठित करने की घोषणा की। यह फैसला मराठा आरक्षण आंदोलन के नेता मनोज जरांगे पाटिल से हुई बातचीत के बाद लिया गया। सरकारी प्रस्ताव सामाजिक न्याय और विशेष सहायता विभाग ने जारी किया। इसमें कहा गया है कि हैदराबाद गजट में दर्ज ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर मराठाओं के दावे की जांच की जाएगी। यदि दस्तावेजों में किसी मराठा परिवार को कुनबी बताया गया है, तो उसे कुनबी प्रमाणपत्र देकर ओबीसी आरक्षण का लाभ दिया जाएगा।

मनोज जरांगे की मांग और आंदोलन

मनोज जरांगे लंबे समय से यह मांग कर रहे थे कि मराठा समुदाय को कुनबी के तौर पर मान्यता दी जाए। कुनबी समुदाय महाराष्ट्र में ओबीसी श्रेणी में आता है और इस श्रेणी में आने से मराठाओं को सरकारी नौकरियों और शिक्षा में आरक्षण मिल सकेगा। जरांगे ने मुंबई के आजाद मैदान में पांच दिन तक अनशन किया, जिसके बाद सरकार और आंदोलनकारियों के बीच सहमति बनी।

मनोज जरांगे की आठ प्रमुख मांगें

सभी मराठा समाज के लोगों को सरलता से कुनबी प्रमाणपत्र (सगे-सोयरे कुनबी प्रमाणपत्र) उपलब्ध कराया जाए।

हैदराबाद, सतारा और औंध गजट को तुरंत लागू किया जाए।

मराठा आंदोलन से जुड़े कार्यकर्ताओं पर दर्ज सभी आपराधिक मामले वापस लिए जाएं।

आंदोलन में जान गंवाने वालों के परिजनों को तत्काल आर्थिक मदद और सरकारी नौकरी दी जाए।

58 लाख से अधिक कुनबी नोंदी ग्राम पंचायत स्तर पर सार्वजनिक की जाएं, ताकि मराठा समाज की पहचान स्पष्ट हो।

वंशावली (शिंदे) समिति को स्वतंत्र कार्यालय और अतिरिक्त समय दिया जाए।

सरकार मराठा-कुनबी एक का आधिकारिक आदेश (जीआर) जारी करे।

सगे-सोयरे प्रमाणपत्र की सत्यापन और मान्यता प्रक्रिया तत्काल शुरू की जाए।

सरकार ने जो छह मांगें स्वीकार की

हैदराबाद गजट लागू करने का निर्णय लिया गया।

सतारा और औंध गजट को लागू करने की प्रक्रिया शुरू, 15 दिनों में कानूनी दिक्कतें दूर होंगी।

आंदोलनकारियों पर दर्ज सभी मुकदमे वापस लेने का आश्वासन।

आंदोलन के दौरान मारे गए लोगों के परिजनों को 15 करोड़ रुपये की आर्थिक मदद और योग्यता अनुसार नौकरी।**

58 लाख कुनबी नोंदी पंचायत स्तर पर सार्वजनिक की जाएगी।

वंशावली (शिंदे) समिति को कार्यालय और कार्यकाल विस्तार मिलेगा।

अधूरी बची 2 मांगें

मराठा-कुनबी एक का जीआर अभी प्रक्रिया में है, लेकिन लागू नहीं हुआ।

सगे-सोयरे प्रमाणपत्र की जांच की प्रक्रिया शुरू है, पर अंतिम फैसला लंबित है।

गांव-स्तरीय पैनल का गठन

जीआर में कहा गया है कि हर गांव में ग्राम सेवक, तलाठी और सहायक कृषि अधिकारी की समिति बनाई जाएगी। यह समिति आवेदकों के दस्तावेजों की जांच करेगी और योग्य पाए जाने वालों की रिपोर्ट संबंधित प्राधिकरण को सौंपेगी। समिति का काम समयबद्ध और पारदर्शी ढंग से करना होगा ताकि पात्र मराठाओं को कुनबी प्रमाणपत्र मिल सके।

पुराने रिकॉर्ड से होगी जांच

सरकार ने साफ किया है कि प्रमाणपत्र पाने के लिए आवेदकों को यह साबित करना होगा कि उनके परिवार या पूर्वजों के पास 21 नवंबर 1961 से पहले कृषि भूमि थी। इसके लिए पुराने राजस्व अभिलेख, भूमि रजिस्टर या अन्य सरकारी दस्तावेज प्रस्तुत करने होंगे। इन दस्तावेजों की जांच गांव-स्तरीय समिति करेगी और पात्रता तय करेगी। महाराष्ट्र सरकार ने जुलाई 2023 में जाति प्रमाणपत्र नियमों में संशोधन कर पुराने दस्तावेजों को मान्य किया था।

इसके बाद जुलाई 2024 में एक और जीआर जारी कर विभागों को पुराने रिकॉर्ड उपलब्ध कराने का आदेश दिया गया था। मंगलवार का जीआर इन्हीं फैसलों को आगे बढ़ाते हुए मराठा समुदाय के लिए एक स्थायी ढांचा तैयार करता है।

मराठा आंदोलन पर क्या बोले मुख्यमंत्री?

महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने मराठा आरक्षण आंदोलन पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि उन्हें खुशी है कि मनोज जरांगे का अनशन समाप्त हो गया है। उन्होंने कैबिनेट उपसमिति और दोनों डिप्टी सीएम, एकनाथ शिंदे व अजित पवार के प्रयासों की सराहना की। फडणवीस ने बताया कि आंदोलनकारियों की प्रमुख मांग हैदराबाद गजट लागू करने की थी, जिसे सरकार ने मान लिया है। उन्होंने स्पष्ट किया कि आरक्षण किसी समूह को नहीं, बल्कि पात्र व्यक्ति को मिलता है। यदि किसी मराठा समाज के पूर्वज का नाम हैदराबाद गजट में कुनबी के रूप में दर्ज है, तो वही दस्तावेज उनके लिए प्रमाण बनेगा और उन्हें ओबीसी श्रेणी का लाभ मिलेगा। मुख्यमंत्री ने आंदोलन के दौरान मुंबईकरों को हुई परेशानियों पर खेद जताया और समाधान तक पहुंचने में सहयोग के लिए कैबिनेट उप-समिति, उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे और अजीत पवार का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि सरकार का संकल्प है कि मराठा और ओबीसी समाज के बीच कोई टकराव न हो और दोनों समुदायों के हित सुरक्षित रहें। उन्होंने दोहराया कि यह फैसला संवैधानिक रूप से टिकाऊ है और अदालत में भी कायम रह सकेगा।

दिल्ली में घरों में घुसा बाढ़ का पानी, सीएम रेखा गुप्ता ने लिया हालात का जायजा

नई दिल्ली। राजधानी दिल्ली में पल-पल यमुना नदी के जलस्तर में बढ़ोतरी हो रही है। यमुना का पानी मंगलवार दोपहर को खतरे के निशान को पार कर 205.90 मीटर पहुंच गया। यमुना की उफान से यमुना खादर सहित राजधानी के कई इलाकों में बाढ़ का पानी लोगों के घरों तक पहुंच गया है। इस स्थिति को देखते हुए लोगों को घरों से राहत शिविर में पहुंचाया गया है। दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने मंगलवार दोपहर को गीता कॉलोनी में यमुना पुल पर बाढ़ की तैयारियों का जायजा लिया और राहत शिविर में पहुंचकर लोगों से बात कर उनकी समस्या जानी। इस दौरान उन्होंने जिलाधिकारी त्रिपिता गुप्ता व सिंचाई विभाग के अधिकारियों से बात की। इसके बाद सीएम यहां से यमुना बाजार पहुंचीं और वहां के हालात का जायजा लिया। फरीदाबाद में यमुना का पानी सुबह से लगातार बढ़ रहा है।

मंगलवार दोपहर को जिले में यमुना का जलस्तर 82 हजार 247 क्यूसेक पर पहुंच गया है। इससे पहले, आज सुबह ओखला बैराज से फरीदाबाद की सीमा में 61 हजार 968 क्यूसेक पानी बह रहा था, जबकि सोमवार को 56 हजार 421 क्यूसेक पानी छोड़ा जा रहा था। यमुना के पानी से खेतों में खड़ी धान की फसल डूब गई है। किसान इसे लेकर खासे चिंतित हैं। फसलों के नुकसान को लेकर सरकार ने किसानों को नुकसान भरपाई को लेकर आर्थिक मुआवजा देने का आश्वासन दिया है। उपायुक्त ने किसानों से कहा है कि वह अपने नुकसान को ई-क्षतिपूर्ति पोर्टल पर अपलोड करें।

किसान अपने नुकसान को ई-क्षतिपूर्ति पोर्टल पर अपलोड करने के लिए तैयार नहीं हैं। क्योंकि 2023 में जब बाढ़ आई थी, तो किसानों ने अपने नुकसान को ई-क्षतिपूर्ति पोर्टल पर अपलोड किया था। जिले से छह हजार किसानों ने अपने नुकसान का अपलोड किया था। तब तत्कालीन उपमुख्यमंत्री एवं आपदा मंत्री दुष्यंत चौटाला ने किसानों को बोरवेल में मिट्टी भर जाने और कोठरा गिर जाने के नुकसान का मुआवजा देने के बारे में घोषणा की थी। तब सरकार ने किसी भी किसान को नुकसान का एक रुपया भी मुआवजा नहीं दिया था। इसलिए किसानों को यह विश्वास नहीं है कि सरकार कोई नुकसान का मुआवजा देगी। यमुना में आई बाढ़ के नुकसान का अधिकारी लगातार गांवों का दौरा कर जायजा रहे हैं। अभी तक रिहायशी क्षेत्र में बसंतपुर-ईस्मालपुर को छोड़ कर किसी गांव की आबादी में जलभराव नहीं हुआ है।

पंजाब आपका एटीएम नहीं है, केजरीवाल पर स्वाति मालीवाल का बड़ा वार

नई दिल्ली।

राज्यसभा सांसद स्वाति मालीवाल ने आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल पर तीखा हमला करते हुए दावा किया कि दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री पंजाब के धन का दुरुपयोग निजी मौज-मस्ती के लिए कर रहे हैं, जबकि राज्य के लोग बाढ़ से जूझ रहे हैं। x पर एक पोस्ट में, स्वाति मालीवाल ने कहा, पंजाब सरकार आपके पालतू गुंडे बिभव कुमार के वेतन, भत्ते और + सुरक्षा पर लाखों रुपये खर्च कर रही है। कल्पना कीजिए कि उनके जैसा व्यक्ति पंजाब के मुख्यमंत्री का मुख्य सलाहकार बन बैठा हो। बेहद शर्मनाक! राज्यसभा सांसद की यह टिप्पणी ऐसे समय में आई है जब पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान ने राज्य के बड़े हिस्से में आई भीषण बाढ़ की स्थिति का हवाला देते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से राज्य के लिए लंबित 60,000 करोड़ रुपये तुरंत जारी करने का आग्रह किया है। मालीवाल ने आगे हमला करते हुए कहा कि पंजाब आपका एटीएम नहीं है, न ही आपके नकारे गए नेताओं के लिए शरणस्थली। वैसे, छोटे-मोटे उद्घाटनों के लिए आप और आपके प्रतिनिधि पंजाब के राजाओं की तरह मैदान में घूमते हैं। लेकिन आज, जब इतनी बड़ी आपदा आई है, तो आप कहाँ हैं? आप लोगों के साथ ज़मीन पर क्यों नहीं हैं? राज्यसभा सांसद ने लिखा कि पंजाब के प्राइवेट जेट का इस्तेमाल अपने निजी मनोरंजन के लिए बंद कीजिए। राज्य के करोड़ों रुपये पहले ही आपकी विलासिता पर बर्बाद हो चुके हैं। पंजाब के हेलीकॉप्टर का टैक्सी की तरह इस्तेमाल करना बंद कीजिए। इस बीच, पंजाब के मंत्री हरपाल सिंह चीमा ने राज्य के बड़े हिस्से में आई भीषण बाढ़ की स्थिति का हवाला देते हुए केंद्र सरकार से 60,000 करोड़ रुपये की बकाया राशि जारी करने का आग्रह किया है। हरपाल चीमा ने कहा कि अभी तक उनकी ओर से कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली है, लेकिन आज केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान को फोन किया। हम पंजाब के सभी भाजपा नेताओं से अनुरोध करते हैं कि वे हमारे 60,000 करोड़ रुपये तुरंत जारी करें ताकि हम पंजाब के लोगों की और प्रभावी ढंग से मदद कर सकें।

क्या आपको कन्नड़ आती है... सीएम सिद्धारमैया के सवाल पर राष्ट्रपति मुर्मू का शानदार जवाब

नई दिल्ली।

राष्ट्रपति की मैसूर यात्रा के दौरान राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू और कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया के बीच भाषा पर एक दोस्ताना बातचीत ने ध्यान खींचा। यह बातचीत अखिल भारतीय वाणी एवं श्रवण संस्थान (एआईआईएसएच) के हीरक जयंती समारोह में हुई, जहाँ राष्ट्रपति मुख्य अतिथि थे। राष्ट्रपति का स्वागत करते हुए, सिद्धारमैया ने मुस्कुराते हुए पूछा कि क्या आप कन्नड़ जानते हैं? हँसते हुए कहा कि मैं कन्नड़ बोलता हूं। इस सवाल पर दर्शकों में ठहाके गूंज उठे। अपने जवाब में, राष्ट्रपति मुर्मू ने स्वीकार किया कि कन्नड़ उनकी मातृभाषा नहीं है, लेकिन उन्होंने भारत की भाषाई और सांस्कृतिक विविधता के प्रति गहरी प्रशंसा व्यक्त की। उन्होंने कहा, मैं माननीय मुख्यमंत्री को बताना चाहूँगी कि हालांकि कन्नड़ मेरी मातृभाषा नहीं है, फिर भी मैं अपने देश की सभी भाषाओं, संस्कृतियों और परंपराओं का बहुत सम्मान करती हूं। मैं उनमें से प्रत्येक का बहुत सम्मान करती हूं। उन्होंने लोगों को अपनी मूल भाषाओं और परंपराओं को संरक्षित करने के लिए प्रोत्साहित किया और कहा कि मैं धीरे-धीरे कन्नड़ सीखने का प्रयास जरूर करूँगी। राष्ट्रपति के इस भाषण पर दर्शकों ने तालियाँ बजाईं। यह बातचीत ऐसे समय में हुई है जब कर्नाटक में भाषा संबंधी बहस एक बार फिर सुर्खियाँ बटोर रही है। इस साल की शुरुआत में सिद्धारमैया ने दैनिक जीवन में कन्नड़ के व्यापक उपयोग का आह्वान करते हुए कहा था कि कर्नाटक में रहने वाले सभी लोगों को यह भाषा बोलनी सीखनी चाहिए। उनके इस बयान पर विपक्षी दलों ने तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की और राज्य में भाषा नीतियों पर नए सिरे से बहस शुरू कर दी। कर्नाटक में भाषा संबंधी मुद्दे लंबे समय से विवाद का विषय रहे हैं। कन्नड़ समर्थक समूह सरकारी, शिक्षा और सार्वजनिक साइनबोर्डों में कन्नड़ के अनिवार्य उपयोग की वकालत करते रहे हैं। दिसंबर 2023 में, कर्नाटक रक्षण वेदिके (केआरवी) ने बेंगलुरु में विरोध प्रदर्शन किया और बीबीएमपी के उस नियम को लागू करने की मांग की, जिसके तहत व्यावसायिक साइनबोर्डों पर 60% पाठ कन्नड़ में होना अनिवार्य है। स्थानीय ऑटो चालकों और गैर-कन्नड़ भाषी निवासियों या पर्यटकों के बीच भी इसी तरह के विवाद सामने आए हैं।

भारी बारिश से गुरुग्राम में बाढ़ जैसी स्थिति, वर्षा ने तोड़ा 5 साल का रिकॉर्ड; 2020 के बाद इस साल जमकर बरसे बादल

गुरुग्राम।मानसून में लगातार हो रही बारिश ने पिछले पांच साल का रिकॉर्ड तोड़ दिया है। वर्ष 2020 के बाद पूरा जुलाई और अगस्त का महीना वर्षा की फुहारों से भीगा रहा। सितंबर की शुरुआत हो गई है और बारिश अभी थमी नहीं है। मौसम विभाग ने इस महीने में भी वर्षा होने की चेतावनी जारी की है। जुलाई में 251 एमएम और अगस्त में 247.5 एमएम वर्षा हो चुकी है। इससे पहले भारी वर्षा साल 2020 में हुई थी। तब जुलाई में 150 एमएम और अगस्त में 292.3 एमएम वर्षा हुई थी। मानसून सक्रिय होने के बाद जून और जुलाई में सबसे यादा वर्षा होती है। पिछले वर्षों की अगर बात करें तो अगस्त के महीने में गुरुग्राम में यादा वर्षा हुई है। इस बार भी अगस्त में यादा दिन तक वर्षा दर्ज की गई। मौसम विभाग के अनुसार तीन और चार सितंबर को क्षेत्र में फिर से वर्षा होने का अनुमान है। सात सितंबर तक बीच -बीच में बूंदाबांदी या हल्की वर्षा होने की संभावना है। मौसम विभाग के अनुसार 15 सितंबर तक एनसीआर सहित प्रदेशभर में मानसून सक्रिय रहता है। कई बार वापस लौटता मानसून भी अछी वर्षा करता है। मौसम विभाग के आंकड़ों के अनुसार जुलाई 2010 में 330.8 एमएम और अगस्त में 380.5 एमएम वर्षा हुई थी। इससे पहले वर्ष 2000 में जुलाई में 223.7 एमएम और 142.0 एमएम वर्षा हुई थी। वर्ष 2003 में जुलाई में 312 एमएम और अगस्त में 304.5 एमएम वर्षा रिकार्ड हुई थी। मौसम विभाग के अनुसार वर्ष 2021 में सितंबर और अक्टूबर में भारी वर्षा हुई थी। इस साल सितंबर में 228 एमएम और अक्टूबर में 225 एमएम वर्षा दर्ज की गई थी।

बारिश से थमी दिल्ली की रफ्तार, द्वारका एक्सप्रेसवे टनल बंद, सड़कों पर जाम से बढ़ी परेशानी

नई दिल्ली। दिल्ली में लगातार हो रही बारिश ने लोगों की मुश्किलें बढ़ा दी हैं. मंगलवार सुबह से ही राजधानी के अलग-अलग इलाकों में ट्रैफिक जाम और जलभराव देखने को मिला. सबसे बड़ी परेशानी तब हुई जब द्वारका एक्सप्रेसवे टनल को बारिश के पानी की वजह से बंद करना पड़ा. इससे यात्रियों को घंटों जाम में फंसे रहना पड़ा. भारी बारिश के कारण द्वारका एक्सप्रेसवे टनल को बंद कर दिया गया. इस वजह से वाहन चालकों को वैकल्पिक मार्ग से गुजरना पड़ा. हालांकि, वहां भी लोगों को राहत नहीं मिली. जानकारी के मुताबिक, ट्रैफिक पुलिसकर्मी ने बिना किसी स्पष्ट कारण बताए करीब 15 मिनट तक पूरा ट्रैफिक रोक दिया. इससे गाड़ियों की लंबी कतार लग गई और लोग परेशान हो गए. सिर्फ एक्सप्रेसवे ही नहीं, बल्कि अन्य हिस्सों में भी लोगों को जाम का सामना करना पड़ा. संगम विहार एमबी रोड पर भारी जाम लग गया. वहीं, तारा अपार्टमेंट रविदास मार्ग रोड पर भी गाड़ियां घंटों तक रेंगती रहीं. ऑफिस टाइम होने के कारण लोगों की परेशानी और बढ़ गई. मौसम विभाग के मुताबिक, दिल्ली-एनसीआर में फिलहाल बारिश का दौर जारी रहेगा. मंगलवार को मध्यम बारिश की संभावना जताई गई है. हालांकि, सोमवार जैसी भारी बारिश की चेतावनी नहीं है. लेकिन 3 सितंबर को जोरदार बारिश और आंधी चलने की आशंका है. वहीं, 4 और 5 सितंबर को भी रुक-रुककर बारिश होती रहेगी. बारिश के चलते दिल्ली में यमुना नदी का जलस्तर बढ़ने का खतरा भी मंडरा रहा है. इसी वजह से प्रशासन पहले ही अलर्ट पर है. मयूर विहार इलाके में राहत शिविर स्थापित किए जा चुके हैं ताकि हालात बिगड़ने पर लोगों को तुरंत सुरक्षित जगह पर पहुंचाया जा सके. लगातार बारिश से राजधानी की सड़कों पर जलभराव, जाम और ट्रैफिक की समस्या आम हो गई है. लोगों का कहना है कि प्रशासन को समय रहते इंतजाम करने चाहिए थे. वहीं, ट्रैफिक पुलिस की मनमानी से भी यात्रियों को खासी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है.

चिप युद्ध से रेअर अर्थ्स युद्ध तक

प्रबीर पुरकायस्थ

प्रौद्योगिकी युद्ध की दुनिया अब विभाजित होकर चिप्स से, अपेक्षाकृत कम जानकारी के और उससे भी बढ़कर कम समझ में आने वाले मैदान, रेअर अर्थ्स की ओर बढ़ गयी है। जो लोग रसायन विज्ञान में तथा पीरियोडिक टेबल से अपरिचित हैं, उनके लिए, तो रेअर अर्थ्स किन्हीं ऐसे रहस्यमय तत्वों जैसे लगते हैं, जो अचानक ही देशों के बीच तकनीकी लड़ाई का नया मैदान बन गए हैं। अब हमें इसका एहसास हो रहा है कि रेअर अर्थ्स अब हमारे रोजमर्रा के जीवन का हिस्सा बन चुके भांति-भांति के उपकरणों के लिए ही अपरिहार्य नहीं हैं, नवीकरणीय या अक्षय ऊर्जा प्रौद्योगिकियों का आधार भी बनाते हैं। कोलंबिया विश्वविद्यालय के प्रोफेसर एडम टूज़ के अनुसार, अगर खनिज ईंधन औद्योगिक क्रांति लाए थे, जिसका नेतृत्व पश्चिम कर रहा था, तो हरित ऊर्जा की ओर संक्रमण का नेतृत्व साफ तौर पर एशिया कर रहा है और चीन इसमें विश्व नेता की हैसियत में है। बहरहाल, रेअर अर्थ्स सिर्फ अक्षय ऊर्जा के लिए आधार ही मुहैया नहीं कराते हैं, बल्कि भांति-भांति के एप्लीकेशनों के लिए भी अपरिहार्य हैं, खासतौर पर इलेक्ट्रोमैग्नेटों के उत्पादन के लिए। इस तरह के इलेक्ट्रोमैग्नेट हमारे मोबाइल फोनों में, बिजली से चलने वाले वाहनों में, सैन्य एप्लीकेशनों में और हमारे रोजमर्रा के इस्तेमाल के अनेक उपकरणों में लगाए जाते हैं। हैरानी की बात नहीं है कि ये चीन के खिलाफ अमेरिका द्वारा चलाए जा रहे प्रौद्योगिकीय तथा आर्थिक युद्ध में भी प्रवेश कर गए हैं। अमेरिका को साफ तौर पर चिप युद्ध में बढ़त हासिल है। ऐसा इसलिए है कि उसे, अद्यतनतम लिथोग्राफिक औजारों की प्रौद्योगिकी पर नियंत्रण हासिल है। लेकिन, ऊर्जा युद्धों के मामले में और खासतौर पर अक्षय ऊर्जा तथा रेअर अर्थ्स पर लड़े जा रहे युद्ध में, परिदृश्य बहुत ही भिन्न है। जैसा कि हम पहले लिख चुके हैं, डच कंपनी एएसएमएल जिन अल्ट्रावायलेट प्रकाश स्रोतों का इस्तेमाल करती है, अमेरिकी पेटेंटों के अंतर्गत आते हैं और यह उन्हें अमेरिकी सरकार के कानूनों के अधीन बना देता है। एएसएमएल, लिथोग्राफिक औजारों की अग्रणी निर्माता है और एक्सट्रीम अल्ट्रावायलेट (ईयूवी) लिथोग्राफिक मशीनों में उसकी इजारेदारी है। अगर पश्चिमी कंपनियों को चिप युद्धों में स्पष्ट बढ़त हासिल है, तो रेअर अर्थ्स की समूची सप्लाई चेन में चीनियों को लगभग इजारेदारी हासिल नजर आती है और इसमें हाई एफीशिएंसी मैग्नेटिक मोटरों का उत्पादन भी शामिल है। ये मोटर अनेकानेक एप्लीकेशनों को चलाती हैं- इलैक्ट्रिक वाहनों से लेकर, पवन टर्बाइनों, एअर इंजनों तथा मोबाइल फोन आदि तक। जिस तरह अमेरिका ने चीन के लिए चिपों के निर्यात पर सीधे-सीधे पाबंदी नहीं लगायी थी बल्कि उन पर आयात नियंत्रण लागू कर दिए थे, वैसा ही चीन ने किया है। चीन ने कुछ खास प्रकार के रेअर अर्थ्स उत्पादों के निर्यात के लिए निर्यात रजिस्ट्रेशन लाइसेंसिंग की विस्तृत शर्तें लगा दी हैं। इस तरह चीन ने यह स्पष्ट कर दिया है कि प्रौद्योगिकी युद्धों में पत्ते सिर्फ पश्चिम के पास ही नहीं हैं, उनके पास भी कुछ बड़े पत्ते हैं। अच्छा, अब सीधे इस पर आते हैं कि रेअर अर्थ्स हैं क्या और क्यों इतने महत्वपूर्ण हैं। रेअर अर्थ्स पीरियोडिक टेबल के 17 तत्वों के एक समूह का नाम है, जिनमें से 6 तत्वों को चीन ने निर्बंधित या रेस्ट्रिक्टेड की श्रेणी में डाल दिया है। अमेरिकी प्रौद्योगिकीय निजाम की ही तरह, इस श्रेणी में आने वाले चीनी उत्पादों के लिए यह कैद है कि कोई भी पार्टी जो चीन से इस तरह की निर्बंधित सामग्री का निर्यात करना चाहती है, उसे इस सामग्री का परवर्ती उपयोग करने वालों और अंतिम उपयोग करने वाली पार्टियों के संबंध में भी विस्तृत दस्तावेजी ब्यौरे पेश करने होंगे। नियोडाइमियम आइरन बोरोन (एन-डी-एफई-बी) इलेक्ट्रोमैग्नेटों का आयात खास दबाव का बिंदु बना हुआ है। इन नियोडाइमियम मैग्नेटों में दो रेअर अर्थ तत्वों का उपयोग होता है-डिस्प्रोसियम और टर्बियम—जोकि रेस्ट्रिक्टेड लिस्ट में हैं और उनका करीब 100 फीसद उत्पादन चीन के हाथ में है। डिस्प्रोसियम और टर्बियम का उपयोग कर बनाए गए नियोडाइमियम मैग्नेटों का चुंबकीय प्रदर्शन बेहतर होता है, ये मैग्नेट हल्के तथा मजबूत होते हैं, उन्हें किसी भी आकार तथा शक्ल में ढाला जा सकता है और ये कहीं ऊंचे तापमानों का सामना कर सकते हैं। तो ये तत्व इतने महत्वपूर्ण क्यों हैं और किन उद्योगों के लिए इतने महत्वपूर्ण हैं? जो चीनी इजारेदारी इस समय खबरों में है, वह हाई एफीशिएंसी इलेक्ट्रोमैग्नेटों के उत्पादन पर इजारेदारी है, जिनकी अक्षय ऊर्जा उपकरणों, मोबाइल फोनों आदि तथा सैन्य क्षेत्र से जुड़े अनेक उपकरणों में महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। इलेक्ट्रिक मोटर की कार्यकुशलता इलेक्ट्रिक वीकल्स (ईवीज़), पवन टर्बाइनों जैसे एप्लीकेशनों के लिए महत्वपूर्ण होती है। हमारे सेल फोन में मोटर की कार्यकुशलता ही यह तय करती है कि दोबारा चार्ज करने की जरूरत पड़ने से पहले, उपकरण कितने समय तक काम कर सकता है। पवन टर्बाइन या इलेक्ट्रिक वाहन के मामले में मैग्नेट की कार्यकुशलता ही, उपकरण की कार्यकुशलता तय करती है और इसलिए उपभोक्ता के लिए उसका बहुत महत्व होता है। इसलिए, सस्ते तथा कार्यकुशलतापूर्ण मैग्नेट, अक्षय ऊर्जा और मोबाइल फोन बाजारों के विस्तार के लिए, बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। पर बात सिर्फ इसी पर खत्म नहीं हो जाती है। इस तरह के कार्यकुशल मैग्नेट हवाई-अंतरिक्ष उद्योग, ड्रोनों तथा मिसाइलों के लिए भी महत्वपूर्ण हैं।

अगर चिप करीब-करीब हरेक आधुनिक उपकरण में प्रवेश कर चुकी है, तो रेअर अर्थ्स का उपयोग करने वाले पुर्जे भी करीब हरेक उपकरण में प्रवेश कर चुके हैं। तो क्या चीन को रेअर अर्थ्स के स्रोतों पर लगभग इजारेदारी हासिल है? नहीं, चीन को रेअर अर्थ्स के स्रोतों पर इजारेदारी हासिल नहीं है। हां! इसके वैश्विक सुरक्षित भंडार का करीब 44 फीसद चीन के पास है, जिसके बाद 22 फीसद वियतनाम के पास है, 21-21 फीसद ब्राजील तथा रूस के पास है, 6.9 फीसद भारत के पास है और 5.7 फीसद आस्ट्रेलिया के पास है, बाकी अन्य के पास। चीन के पास लगभग वैश्विक इजारेदारी है, अन्य सामग्रियों से रेअर अर्थ्स सामग्रियों के पृथक्करण में और रेअर अर्थ्स सामग्रियों के आधार पर बने ऐसे भांति-भांति के उत्पादों की आपूर्ति शृंखला में, जिन उत्पादों की अनेक औद्योगिक तथा सैन्य एप्लीकेशनों या उपयोगों में केंद्रीय भूमिका है। वैसे इन्हें रेअर या दुर्लभ कहा तो जाता है, लेकिन वास्तव में ये सामग्रियां धरती की सतह पर काफी व्यापक पैमाने पर मिलती हैं। समस्या यह है कि ये बहुत ही विरल रूप में और अक्सर रेडियोधर्मी तत्वों के साथ मिश्रित रूप में पायी जाती हैं। उदाहरण के रूप में भारत में मोनाजाइट रेत, जिसमें रेडियोधर्मी तत्व थोरियम भी मिलता है। इंडियन रेअर अर्थ लि0 (आइआरईएल) को इस क्षेत्र में विशेषज्ञता का लंबा इतिहास है। लेकिन, इसका ध्यान मुख्य रूप से थोरियम के उत्पादन पर रहा है। इसका नतीजा यह हुआ है कि आइआरईएल ने रेअर अर्थ्स पर, जो मोनाजाइट रेत में थोरियम के साथ मिश्रित पाए जाते हैं, अपने आप में महत्वपूर्ण उत्पाद के रूप में ध्यान ही नहीं दिया है, जबकि अक्षय ऊर्जा के दौर में इस सामग्री का महत्व बहुत बढ़ गया है। चीन ने अपने रेअर अर्थ्स क्षेत्र का निर्माण कैसे किया और कैसे कुछ रेअर अर्थ उत्पादों के मामले में लगभग इजारेदारी की हैसियत हासिल कर ली, जबकि इससे संबंधित कच्चे माल व्यापक रूप से उपलब्ध हैं और आस्ट्रेलिया में भी उपलब्ध हैं, जो अमेरिका का बहुत ही घनिष्ठ सहयोगी है और हिंद-प्रशांत क्षेत्र में उसका खास-सहोदार है? 1950 के दशक से लेकर 1980 के दशक तक, अमेरिका ही रेअर अर्थ्स के मामले में अग्रणी उत्पादक था। उस जमाने में रेअर अर्थ्स के भांति-भांति के प्रयोग हुआ करते थे—रंगीन टेलीविजन से लेकर कांच की रंगाई, अथवा क्रेकिंग यानी तेल का अपघटन, आदि। आज रेअर अर्थ सामग्रियां भांति-भांति के उद्योगों के लिए अत्यधिक आवश्यक हैं—पवन टर्बाइनों से, इलेक्ट्रिक वाहनों, विमानों, रोबोटिक्स, आदि तक। सैन्य क्षेत्र में इनका उपयोग मिसाइलों, लेसरों, टैंक आदि वाहन चालित प्रणालियों और सैन्य संचार में होता है। जहां चीन रेअर अर्थ्स की कुल मात्रा में से करीब 60 फीसद का खुद उत्पादन करता है, वह दुनिया भर में इस सामग्री के करीब 90 फीसद का प्रसंस्करण या प्रोसेसिंग करता है। आशय यह कि वह म्यांमार, आस्ट्रेलिया, वियतनाम आदि देशों में उत्पादित रेअर अर्थ सामग्रियों का भी प्रसंस्करण करता है। और जहां तक भारी हैवी अर्थ्स का सवाल है, जिनका उपयोग मिसाल के तौर पर उन चुंबकों या मैग्नेटों में होता है, जिनका हम पीछे जिक्र कर आए हैं, उनके मामले में चीन की इजारेदारी और भी ज्यादा है। यह इजारेदारी 99.9 फीसद न भी सही, 99 फीसद से ऊपर जरूर है। ये रेअर अर्थ तत्व अमेरिकी सेना के लिए कितने महत्वपूर्ण हैं? सेंटर फॉर स्ट्रेटेजिक एंड इंटरनेशनल स्टडीज के अनुसार, जो कि एक अमेरिकी थिंक टैंक है, ''रेअर अर्थ तत्व या आरईई अनेक प्रतिरक्षा प्रौद्योगिकियों के लिए महत्वपूर्ण हैं, जिनमें एफ-35 लड़ाकू जेट, वर्जीनिया तथा कोलंबिया क्लास की पनडुब्बियां, टॉमहॉक मिसाइलें, रडार प्रणालियां, प्रिडेटर मानवरहित एरियल व्हीकल और स्मार्ट बमों की ज्वाइंट डायरेक्ट अटैक म्यूनिशन शृंखला शामिल हैं।

सम्पादकीय...

नकली दवाएं मरीजों के लिए जानलेवा साबित होती हैं

अगर आप डॉक्टर की बताई मात्रा और सही समय पर दवाइयां ले रहे हैं और आपकी तबीयत में सुधार नहीं हो रहा है तो फिर आप जो दवा ले रहे हैं वो नकली हो सकती है। एक रिपोर्ट में दावा किया गया है कि भारत में हर चौथी दवा नकली है। बुखार, शुगर, ब्लड प्रेशर, पेन किलर से लेकर कैंसर तक की घटिया या नकली दवाएं मार्केट में हैं। कई नामी देसी-विदेशी कंपनियों के नाम की ये दवाइयां बिक रही हैं। हाल ही में उत्तर प्रदेश की ताज नगरी आगरा में नकली दवाओं के बड़े सिंडिकेट का पर्दाफाश हुआ है। जांच में सामने आया है कि पुडुचेरी-चेन्नई में नकली दवाएं बनाकर आगरा में भंडारण कर चार राज्यों में खपाया जा रहा था। औषधि विभाग की टीम ने ऐसी 8 फर्मों की करीब 71 करोड़ की दवाएं सीज की हैं और तीन दवा कारोबारियों को गिरफ्तार किया है। सिंडिकेट में 40 दवा विक्रेताओं के शामिल होने के सुराग मिले हैं। दवाओं का काला कारोबार करने के लिए 15 छद्म फर्में भी चिह्नित की हैं। इनके नाम पर ये कई राज्यों में कारोबार कर रहे थे। दवाओं को मंगवाने और भेजने में ये रेलवे सेवा का उपयोग कर रहे थे। पिछले साल नवंबर में आगरा के शास्त्रीपुरम इलाके में पशुओं की नकली दवाएं बनाने की फैक्ट्री पकड़ी गई थी। नकली दवाओं के कारोबार का नेटवर्क पूरे देश में फैला है। इंसानों ही नहीं जानवरों की दवाइयां भी नकली बनाई जा रही हैं। इस काले धंधे के तार ऊपर से नीचे तक जुड़े हुए हैं। 1969 से संचालित देश के सबसे बड़े थोक दवा व्यापारिक केंद्रों में शुमार भागीरथी पैलेस पर पिछले तीन वर्षों में दिल्ली औषधि नियंत्रण विभाग और दिल्ली पुलिस ने छापेमारी कर 14 करोड़ से अधिक की नकली दवाएं पकड़ी हैं। खास बात यह है कि इनमें से ज्यादातर नकली दवाएं कैंसर, हृदय, किडनी, डायबिटीज और नसों के रोगों से संबंधित थीं, जिन्हें नामी दवा कंपनियों के ब्रांड नाम से पैक कर बेचा जा रहा था। नकली दवाओं की पैकेजिंग, बारकोड-क्यूआर कोड मूल दवाओं जैसे होने से इनके खरीदार झांसे में आ जाते हैं जिससे मरीजों की जान खतरे में पड़ जाती है। वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गनाइजेशन यानी डब्ल्यूएचओ का दावा है कि दुनिया में नकली दवाओं का कारोबार 200 बिलियन डॉलर यानी करीब 16,60,000 करोड़ रुपये का है। नकली दवाएं 67 फीसदी जीवन के लिए खतरा होती हैं। बची हुई दवाएं खतरनाक भले ही ना हों लेकिन उनमें बीमारी ठीक करने वाला सॉल्ट नहीं होता है, जिस वजह से मरीज की तबीयत ठीक नहीं होती है। आखिरकार मर्ज बिगड़ता चला जाता है जिससे वह मौत के मुंह तक चला जाता है। नकली या घटिया दवाओं के एक्सपोर्ट और इंपोर्ट का भारत दुनिया का चौथा सबसे बड़ा बाजार है। एसोचैम की एक स्टडी के मुताबिक, भारत में 25 फीसदी दवाएं नकली या घटिया हैं। भारतीय मार्केट में इनका कारोबार 352 करोड़ रुपये का है। वर्ष 2024 में तेलंगाना में करोड़ों की नकली या घटिया दवाइयां पकड़ी गईं। तेलंगाना ड्रग्स कंट्रोल एडमिनिस्ट्रेशन की जांच में खुलासा हुआ कि नामी कंपनियों के नाम से बनी इन दवाइयों में चाक पाउडर या स्टार्च था। इसी तरह अगर कैप्सूल एमोक्सिसिलिन का है तो उसमें सस्ती दवा पेरासिटामोल भरी हुई थी। इसी तरह 500 ग्राम एमोक्सिसिलिन सॉल्ट की मात्रा सिर्फ 50 ग्राम ही थी। कैंसर तक की नकली दवाएं पकड़ी गईं। ये सभी दवाएं उत्तराखंड के काशीपुर और यूपी के गाजियाबाद से कूरियर के जरिए तेलंगाना पहुंची थीं। इन दवाओं की पैकिंग इस तरह की गई थी जो बिल्कुल असली लग रही थीं। इनकी पहचान करना मुश्किल था। उत्तराखंड में पिछले साल कई दवा कंपनियों के सैंपल जांच में खरे नहीं उतरे तो उनका लाइसेंस कैंसल किया गया। यह सभी दवाइयां उत्तराखंड में बन रही थीं। इसी तरह आगरा के मोहम्मदपुर में 2024 में नकली दवा बनाने वाली फैक्ट्री पकड़ी गई। पुलिस ने 80 करोड़ रुपये की नकली दवाएं पकड़ी थीं। इसमें कैंसर, डायबिटीज, एलर्जी, स्लीपिंग पिल्स और एंटीबायोटिक्स दवाएं शामिल थीं। इसी तरह देश के कई राज्यों में छापेमारी कर नकली दवाओं की खेप पकड़ी गई। इससे पहले कोविड-19 के समय भी देशभर में नकली रेमडेसिविर के इंजेक्शन सप्लाई करने के मामले तक सामने आए थे। दिल्ली पुलिस की क्राइम ब्रांच ने भी कई ऑपरेशन में पिछले सालों में दिल्ली-एनसीआर में चल रहे कई सिंडिकेट का भंडाफोड़ किया। गाजियाबाद के लोनी स्थित ट्रोनिका सिटी में नकली दवाओं का गोदाम पकड़ा, जिसका मास्टरमाइंड एक डॉक्टर निकला। ये सोनीपत के गन्नौर स्थित फैक्ट्री में भारत, अमेरिका, इंग्लैंड, बांग्लादेश और श्रीलंका की 7 बड़ी कंपनियों के 20 से ज्यादा ब्रांड की नकली दवा तैयार कर रहे थे। इंडिया मार्ट और भागीरथ प्लेस तक में इनकी सप्लाई थी। भारत के अलावा चीन, बांग्लादेश और नेपाल में एक्सपोर्ट करते थे। विशेषज्ञों के अनुसार नामी ब्रांडेड कंपनियों के नाम से ही नकली या घटिया दवाइयां बनती हैं, क्योंकि इसके जरिए जालसाज मोटा मुनाफा कमाते हैं। दूसरी तरफ, जेनेरिक दवाइयों के नकली होने के मामले अभी तक सामने नहीं आए हैं, क्योंकि इन्हें नकली बनाने पर कोई ज्यादा फायदा नहीं होने वाला है। जेनेरिक दवाइयां सस्ती होती हैं जो उसी तरह का फायदा करती हैं, जिस तरह का लाभ ब्रांडेड दवाइयों से मिलता है। सरकार जेनेरिक दवाइयों को बढ़ावा दे रही है जो काफी सस्ती होती हैं। इन्हें आप मेडिकल स्टोर और जन औषधि केंद्र से खरीद सकते हैं। कुछ ऐसी दवाएं हैं जिन्हें ज्यादा मात्रा में लेने पर नशा होने लगता है। शराब और ड्रग्स से इन दवाओं का नशा काफी सस्ता होने से नशेड़ी इसका इस्तेमाल करते हैं। इस वजह से कफ सिरप, पेन किलर्स, डिप्रेशन पिल्स और मनोरोगियों को दिए जाने वाले इंजेक्शन की खपत बढ़ रही है। इसका फायदा दवा बनाने वाली कंपनियां भी उठा रही हैं, जो एक लाइसेंस पर कई फैक्ट्रियां चलाकर इन्हें धड़ल्ले से बना रही हैं। डिप्रेशन के इलाज के लिए दी जाने वाली गोली का आजकल रेव पार्टियों में काफी इस्तेमाल हो रहा है। यह सही है कि असली की आड़ में नकली दवा का कारोबार पनप रहा है। देखने में यह नकली दवा ब्रांडेड दवा की तरह ही होती है लेकिन यह अलग-अलग मटेरियल्स से तैयार होती है। आगरा में दवा माफियाओं ने ब्रांडेड कंपनी की दवाओं के सुरक्षा फीचर में भी सेंधमारी की। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से नकली क्यूआर कोड बनाया। यहां तक कि कंपनी के एक ही बैच नंबर से 1000 गुना तक दवाएं बनाकर बाजार में खपा दीं। इसमें एक ही बिल को बार-बार दर्शाने पर ये खेल पकड़ में आया। नामी कंपनी को जब निर्माण से ज्यादा दवाएं बाजार में मिलने लगीं तब विभाग से इसकी शिकायत की। 3-4 महीने तक रेकी करने के बाद साक्ष्य जुटाए फिर छापा मारा। नकली दवाओं की बिक्री बेहद गंभीर मामला है लेकिन अगर आप जागरूक नहीं हैं तो ये आसानी से पकड़ में नहीं आ पातीं। दूसरी सबसे बड़ी वजह है कमजोर निगरानी सिस्टम। कायदे से ड्रग कंट्रोल डिपार्टमेंट की ये जिम्मेदारी है कि वह नकली दवाओं की खरीद- फरोख्त करने वालों को पकड़े लेकिन अमूमन ऐसा कम ही देखने को मिलता है। अगर नियमित तौर पर ये डिपार्टमेंट जांच पड़ताल करे तो नकली दवाएं बेचने वालों की लगाम कसी जा सकती है। नकली दवाएं मरीजों के लिए जानलेवा साबित होती हैं। ऐसे में जरूरी है निगरानी सिस्टम को दुरुस्त किया जाए।

निगरानी में मतदाता सूची!

चुनाव आयोग द्वारा बिहार में जारी सघन मतदाता सूची पुनरीक्षण का कार्य अब विधिक सेवा प्राधिकरण के दायरे में भी आ गया है। इस मामले में न्यायालय के समक्ष दायर याचिकाओं की सुनवाई चल रही है जो कि मतदाता सूची पुनरीक्षण के खिलाफ हैं। न्यायालय ने आज इस सम्बन्ध में जो आदेश दिया है वह काफी महत्वपूर्ण है और इशारा करता है कि आगामी 30 सितम्बर को चुनाव आयोग अपनी अंतिम संशोधित मतदाता सूची प्रकाशित नहीं कर सकता क्योंकि न्यायालय ने साफ कह दिया है कि जिन 65 लाख लोगों के नाम चुनाव आयोग ने बिहार की मतदाता सूची से उड़ाये हैं उन्हें 1 सितम्बर के बाद भी अपना नाम जुड़वाने के लिए समय दिया जायेगा और चुनाव आयोग इसके लिए मना नहीं कर सकता। सुनवाई के दौरान याचिकाकर्ताओं की ओर से दलील दी गई कि चुनाव आयोग अपना नाम जुड़वाने या हटवाने वाले मतदाताओं के आधार कार्ड को एक सबूत नहीं मान रहा है जबकि न्यायालय ने ही यह आदेश दिया था कि आधार कार्ड को एक पक्का सबूत माना जाना चाहिए। याचिकाकर्ताओं ने शिकायत की है कि इसके बावजूद चुनाव आयोग उनके आवेदन स्वीकार नहीं कर रहा है और मतदान केन्द्र स्तर के अधिकारी अपना हाथ खड़ा कर रहे हैं। इस पर सर्वोच्च न्यायालय के न्यायमूर्तियों ने निर्देश दिया कि बिहार विधि सेवा प्राधिकरण के स्वयं सेवकों को इस काम में लगाया जाये और राजनैतिक दल भी आगे आकर इस काम में सहयोग करें। इससे जाहिर होता है कि चुनाव आयोग का काम अब पूरी तरह पारदर्शी तरीके से होने में मदद मिलेगी। चुनाव आयोग ने बिहार की मतदाता सूची अन्तरिम तौर पर जारी की थी और कहा था कि राज्य के कुल 7.89 करोड़ मतदाताओं में से 65 लाख के नाम हटा दिये गये हैं। पहले उसने इसका कारण भी बताने से इन्कार कर दिया था मगर जब सर्वोच्च न्यायालय ने आदेश दिया तो उसने सभी 65 लाख लोगों के नाम सार्वजनिक किये और कारण भी बताया। चुनाव आयोग भारत में एक स्वायत्तशासी स्वतन्त्र संस्था है और सरकार का अंग नहीं है। इसकी जिम्मेदारी सीधे मतदाताओं के प्रति होती है क्योंकि यह भारतीय नागरिकों को मिले एक वोट के संवैधानिक अधिकार की रक्षा करता है। इसका कर्त्तव्य बनता है कि भारत का एक भी जायज मतदाता छूटे नहीं। चूंकि भारत का पूरा लोकतन्त्र मूल रूप से वोट के अधिकार पर ही आश्रित है अतः प्रत्येक मतदाता का हक बनता है कि उसके वोट का अधिकार संरक्षित रहे। चुनाव आयोग जब अपनी मतदाता सूची का संशोधन करता है तो उसका लक्ष्य रहता है कि 18 वर्ष के हर वयस्क नागरिक का वोट बने। बिना किसी शक के चुनाव आयोग भारत के वैध नागरिकों का ही वोट बनाता है मगर उसे यह अधिकार नहीं होता कि वह मतदाताओं की नागरिकता की जांच करे। इसके विपरीत प्रत्येक मतदाता की यह जिम्मेदारी होती है कि वह अपनी नागरिकता की घोषणा करे। उसे चुनाव आयोग को यह लिख कर देना होता है कि वह भारत का नागरिक है। उसकी इस नागरिकता की जांच केवल केन्द्रीय गृह मन्त्रालय ही कर सकता है। गृह मन्त्रालय हर दस साल बाद जनगणना का काम करता है और भारतीय नागरिकों की वैधता की इसमें जांच भी हो जाती है। भारत में यह काम पिछले 2010 -11 के बाद से नहीं हुआ है। अतः इसे कराने की घोषणा केन्द्र सरकार ने तीन महीने पहले ही कर दी थी। यह जनगणना 2027 में फरवरी महीने से शुरू होगी। मगर इससे पहले घरों या परिवारों की जनगणना होगी जो अप्रैल 26 से लेकर सितम्बर महीने तक जारी रहेगी। इसके लिए भारत के महापंजीयक की ओर से सरकार से लगभग 15 हजार करोड़ रुपये की मांग की गई है। बहुत स्पष्ट है कि इस जनगणना में प्रत्येक भारतीय की गिनती होगी और उन घुसपैठियों का भी पता चलेगा जो भारत की धरती पर अवैध रूप से रह रहे हैं। मगर मतदाता सूची में भी किसी घुसपैठिये का नाम नहीं आना चाहिए। इसके लिए भी कानून में प्रावधान है। किसी भी मतदाता की नागरिकता को कोई दूसरा व्यक्ति चुनौती दे सकता है। इसकी अपनी प्रक्रिया है। ऐसा नहीं है कि भारत में ऐसे सवाल पहली बार उठ रहे हैं। 90 के दशक में जब मुख्य चुनाव आयुक्त स्व. टी.एन. शेषन थे तो उन्होंने प्रत्येक मतदाता के लिए पहचान पत्र या वोटर कार्ड जारी करने को आवश्यक बना दिया था। इससे भी घुसपैठियों को पहचानने में मदद मिली थी। मगर वर्तमान मुख्य चुनाव आयुक्त ने आधार कार्ड को ही मतदाता की पहचान मानने से इन्कार कर दिया और 11 ऐसे दस्तावेजों में से किसी एक को सबूत के तौर पर दिखाने का नियम बनाया था जो भारत के नागरिकों के पास होते हैं। मगर आधार कार्ड ऐसा दस्तावेज है जो भारत के लगभग हर निवासी के पास होता है। बेशक यह नागरिकता की पहचान नहीं होता मगर यह तो प्रमाणित करता है कि वह व्यक्ति भारत का निवासी है। निवासी व नागरिक में फर्क होता है जिसकी पहचान गृह मन्त्रालय करता है। अतः चुनाव आयोग का कार्य मतदाता सूची बनाने तक ही सीमित किया गया। वर्ष 2027 में जो जनगणना होगी उसमें जातिगत गणना भी की जायेगी जिससे यह मालूम हो सकेगा कि भारत में कितने लोग अनुसूचित जाति व जनजाति के हैं, कितने पिछड़े वर्ग के हैं, कितने अल्पसंख्यक समुदायों के हैं और कितने सवर्ण कहे जाने वाले लोग हैं। वर्तमान में चुनाव आयोग जो बिहार में मतदाता सूची पुनरीक्षण का कार्य कर रहा है और 65 लाख लोगों को मताधिकार से वंचित कर रहा है, उसके बारे में कहा जा रहा है कि इनमें सर्वाधिक गरीब तबके के लोग हैं और महिलाएं भी शामिल हैं। जाहिर है कि इससे आम लोगों में अपने वोट के अधिकार के प्रति चिन्ता उठी है। बिहार की गूंज देश के अन्य राज्यों में भी सुनाई पड़ने लगी है। प. बंगाल इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। इस राज्य में अगले वर्ष 2026 में चुनाव होने वाले हैं। इसके साथ कुछ अन्य राज्यों में भी चुनाव होने हैं। सर्वोच्च न्यायालय के ताजा फैसले की रोशनी में ही सब तथ्यों का अवलोकन किया जाना चाहिए। मोटे तौर पर यही कहा जा सकता है कि मतदाता सूची पुनरीक्षण का कार्य बिहार की तरह अफरा- तफरी में नहीं किया जाना चाहिए।

चीन की चाल- तानाशाह की किस्मत !

हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जापान होते हुए चीन पहुंचे हैं। जापान से हमारे रिश्ते हमेशा ही बेहतरीन रहे हैं, जापान का नजरिया हमारे प्रति केवल आर्थिक ही नहीं है, सांस्कृतिक भी है। हम भले ही उन्हें आर्थिक रूप से पछाड़ कर तीसरी बड़ी शक्ति बन चुके हैं लेकिन जापान की तकनीकी क्षमता कमाल की है। जहां तक सात साल बाद प्रधानमंत्री की चीन यात्रा का सवाल है तो पूरी दुनिया की आंखें लगी हुई हैं कि ये महाशक्तियां क्या करने जा रही हैं, इस बीच खबर है कि ट्रम्प ने अपनी प्रस्तावित भारत यात्रा रद्द कर दी है। उन्होंने भारत को डेड इकोनॉमी कहा लेकिन भारतीय जीडीपी अभी भी 7.5 की रफ्तार से बढ़ रही है। ट्रम्प को निश्चय ही मिर्ची लग रही होगी लेकिन मुझे लगता है कि अभी भी यदि सही तरीके से प्रयास किए जाएं तो दोनों देशों के रिश्ते पटरी पर लौट सकते हैं। इस पूरे उथल-पुथल के बीच एक खबर ने सबका ध्यान खींचा है। चीन ने बीजिंग में 3 सितंबर को होने वाली सैन्य परेड के लिए उत्तर कोरिया के खूंखार तानाशाह को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया है। उस सैन्य परेड में पुतिन भी होंगे। सवाल यह है कि इस साल चीन ने उत्तर कोरिया के तानाशाह को क्यों बुलाया है? इसके पहले 1959 में किम जोंग उन के दादा किम सुंग ने चीनी परेड में भाग लिया था। उसके बाद से वहां के किसी नेता को चीन ने कभी बुलाया ही नहीं। तो इस बार ऐसा क्या हो गया कि किम जोंग उन के लिए अचानक प्रेम उमड़ पड़ा? यह हम सभी जानते हैं कि उत्तर कोरिया के दो सबसे बड़े समर्थक हैं। एक रूस और दूसरा चीन, वह दोनों की गोद में खेलता है। लेकिन दोनों ही देश यह जानते हैं कि ये दुनिया का उपद्रवी गुंडा है और अमेरिका के खिलाफ एक कारगर हथियार के रूप में काम आ सकता है। किम जोंग उन जानते हैं कि यदि इन दो पड़ोसियों ने कभी नाक टेढ़ी कर ली तो मुश्किल होगी, इसलिए वे अपने सैनिकों को रूस की ओर से लड़ने के लिए भेजते हैं तो जरूरत के अनुसार रूस और चीन को मजदूरों की सप्लाई भी करते हैं। मजदूरों और सैनिकों के हिस्से में बस थोड़ा सा पैसा आता है और ज्यादातर हिस्सा किम जोंग के हिस्से में चला जाता है। अमेरिका और नॉर्थ कोरिया में हमेशा 36 का आंकड़ा रहा क्योंकि कोरिया के दो भागों में टूटने के बाद साउथ कोरिया पर अमेरिका का साया रहा जबकि रूस के साये में नॉर्थ कोरिया तानाशाह के कब्जे में चला गया। अमेरिका ने बहुत कोशिश की लेकिन किम जोंग उन ने आखिरकार परमाणु बम बना ही लिया और वह दावा करते हैं कि न्यूयॉर्क, वाशिंगटन से लेकर दूसरे तमाम अमेरिकी शहर उनकी जद में हैं। आपको याद होगा कि 2019 में डोनाल्ड ट्रम्प ने किम जोंग उन से मुलाकात भी की थी। उस मुलाकात में चीन ने पर्दे के पीछे से बड़ी भूमिका निभाई थी। तानाशाह ने ट्रम्प की एक बात भी नहीं मानी और ट्रम्प का शांति दूत बनने का ख्वाब अधूरा रह गया। ट्रम्प की चाहत है कि तानाशाह से वे एक बार और मिलें, अभी हाल ही में दक्षिण कोरिया के राष्ट्रपति ली जे-म्यांग से मुलाकात के दौरान ट्रम्प ने यह इच्छा जाहिर की थी।

विश्व नारियल दिवस 2 सितंबर 2025- मानव स्वास्थ्य, संस्कृति और वैश्विक समृद्धि का प्रतीक

वैश्विक स्तरपर प्रकृति ने मानव को अनेक उपहार दिए हैं, जिनमें पेड़-पौधे, फल-फूल और जल हमारे अस्तित्व का आधार हैं। इन्हीं उपहारों में नारियल एक ऐसा फल है जिसेजीवन वृक्ष- कहा जाता है। यह केवल एक खाद्य पदार्थ ही नहीं, बल्कि संपूर्ण जीवन के लिए उपयोगी संसाधन है। नारियल का पेड़, उसका फल,जटा, पत्तियाँ, लकड़ी,सब कुछ मानव सभ्यता को पोषण, आश्रय, औषधि और रोजगार प्रदान करता है।आज मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र यह बातें इसलिए कर रहा हूं क्योंकि नारियल के महत्व को रेखांकित करने के लिए हर वर्ष 2 सितंबर 2025 को विश्व नारियल दिवस मनायाजा रहा है। 2009 में एशिया-प्रशांत नारियल समुदाय के गठन के बाद से इस दिवस की शुरुआत हुई। यह संगठन विश्व के उन देशों का प्रतिनिधित्व करता है जहाँ नारियल की खेती बड़े पैमाने पर होती है। आज विश्व नारियल दिवस केवल एक कृषि पर्व नहीं है, बल्कि यह स्वास्थ्य, संस्कृति, पर्यावरण और वैश्विक अर्थव्यवस्था से जुड़ा एक आंदोलन बन चुका है।नारियल दिवस मनाने का मुख्य उद्देश्य नारियल उत्पादकों और उपभोक्ताओं को जोड़ना, किसानों को सशक्त बनाना और सतत विकास के मार्ग पर आगे बढ़ना है। एपीसीसी का गठन 2 सितंबर 2009 को इंडोनेशिया की राजधानी जकार्ता में हुआ था। इसमें भारत, श्रीलंका, फिलीपींस, इंडोनेशिया, थाईलैंड, वियतनाम, मलेशिया, पापुआ न्यू गिनी और फिजी जैसे देश शामिल हैं।यह संगठन किसानों को आधुनिक खेती तकनीक, फसल संरक्षण, अनुसंधान और अंतरराष्ट्रीय बाजार तक पहुँच प्रदान करने में सहायक है। विश्व स्तरपर लगभग 12 करोड़ किसान परिवार नारियल की खेती पर निर्भर हैं।फिलीपींस, इंडोनेशिया और भारत मिलकर विश्व का लगभग 70 पर्सेंट नारियल उत्पादन करते हैं। नारियल तेल, कोयर, फर्नीचर, सौंदर्य प्रसाधन, औषधियाँ और पेय पदार्थ अरबों डॉलर के वैश्विक व्यापार का हिस्सा हैं, जो दर्शाता है कि नारियल केवल एक स्थानीय फसल नहीं बल्कि एक वैश्विक वस्तु है। साथियों बात अगर हम भारत में नारियल को केवल एक फल नहीं बल्कि श्रद्धा और विश्वास का प्रतीक मानने की करें तो, इसे श्रीफल कहा जाता है,जिसका अर्थ हैसमृद्धि देने वाला फल।भारतीय धार्मिक परंपराओं में बिना नारियल के कोई भी पूजा पूर्ण नहीं मानी जाती। गणेश पूजा में नारियल अनिवार्य होता है, क्योंकि यह विघ्नहर्ता के आशीर्वाद का प्रतीक है।दक्षिण भारत में विवाह, गृहप्रवेश और मंदिरों की पूजा में इसका विशेष महत्व है। बौद्ध और जैन धर्म में भी नारियल को पवित्रता और शांति का प्रतीक माना गया है।नारियल के कठोर खोल को अहंकार और वासनाओं का प्रतीक माना जाता है, जिसे फोड़ने पर शुद्ध गूदा और जल प्राप्त होता है। यह आत्मा की पवित्रता और ईश्वर से एकत्व का प्रतीक हैमंदिरों में नारियल चढ़ाने की परंपरा केवल भारत तक सीमित नहीं है। नेपाल, श्रीलंका, थाईलैंड और बाली (इंडोनेशिया) जैसे देशों में भी यह परंपरा देखने को मिलती है। दक्षिण भारत के मंदिरों में नारियल फोड़ना आत्मसमर्पण का प्रतीक है और इससे जुड़े छोटे-छोटे कारोबार हजारों लोगों को रोजगार भी उपलब्ध कराते हैं। बौद्ध भिक्षु प्रार्थना के समय नारियल जल अर्पित करते हैं। इस प्रकार, नारियल धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से लोक और परलोक दोनों से जुड़ा हुआ है और यह कई देशों की आध्यात्मिक परंपराओं में गहराई से समाया हुआ है। साथियों बात अगर हम नारियल का वृक्ष कल्पवृक्ष कहलाने की करें तो,क्योंकि इसका कोई भी हिस्सा बेकार नहीं जाता। फल से हमें जल और गूदा मिलता है, जो पोषण और ऊर्जा का स्रोत है। गूदे से निकाला गया नारियल तेल बालों, त्वचा और भोजन के लिए औषधि के रूप में उपयोग होता है।जटा से रस्सी, चटाई, कालीन, ब्रश और गद्दे बनाए जाते हैं। पत्तियों का प्रयोग झोपड़ी, टोकरियाँ और सजावटी वस्तुएँ बनाने में होता है, जबकि तना फर्नीचर, पुल और नाव बनाने के लिए उपयुक्त है। जड़ें औषधि और रंगाई में प्रयोग की जाती हैं। यही कारण है कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नारियल कोट्री ऑफ लाइफ- यानें जीवन का वृक्ष कहा जाता है। साथियों बात अगर हम वैज्ञानिक दृष्टिकोण से नारियल को देखने की करें तो विज्ञान की दृष्टि से भी नारियल एक नेचुरल सुपरफ़ूड हैइसमें विटामिन बी,सी और ई प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। पोटेशियम,कैल्शियम,मैग्नीशियम और आयरन जैसे खनिज शरीर को ऊर्जा और मजबूती प्रदान करते हैं। इसमें प्रोटीन और फाइबर भी अच्छी मात्रा में उपलब्ध हैं।नारियल जल को प्राकृतिक ओआरएस कहा जाता है, जो शरीर को हाइड्रेट करता है और गर्मी या बीमारी के दौरान ऊर्जा देता है। हृदय और किडनी रोगों में यह विशेष रूप से लाभकारी है। नारियल तेल एंटीवायरल और एंटीबैक्टीरियल गुणों से युक्त है और मधुमेह तथा रक्तचाप नियंत्रित करने में सहायक है।आधुनिक शोध बताते हैं कि नारियल का प्रयोग वजन घटाने, डिटॉक्स और प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए किया जा सकता है। यही कारण है कि विश्व स्वास्थ्य संगठन और आयुर्वेद दोनों ने नारियल को स्वास्थ्य के लिए अमृत समान माना है। साथियों बात अगर हम नारियल वृक्ष की आयु और उत्पादनक्षमता के लिए भी अद्वितीय होने की करें तो,यह 60 से 80 फीट तक ऊँचा होता है और लगभग 70 से 80 वर्षों तक जीवित रहता है। करीब 15 वर्षों के बाद इसमें नियमित रूप से फल लगना शुरू होता है और एक पेड़ अपनी आयु में हजारों नारियल देता है। यह दीर्घायु वृक्ष किसानों को पीढ़ियों तक आय देता है और उन्हें स्थिरता प्रदान करता है। इसी कारण इसेगरीब का वृक्ष- (पुअर मैन्स ट्री) कहा जाता है क्योंकि यह हर वर्ग को लाभ पहुँचाता है। साथियों बात अगर हम नारियल उद्योग वैश्विक मूल्य श्रृंखला का हिस्सा होने की करेंतो,फिलीपींस नारियल तेल का सबसे बड़ा निर्यातक है, जबकि इंडोनेशिया उत्पादन में विश्व में प्रथम स्थान पर है। भारत तीसरे स्थान पर है और घरेलू खपत में सबसे आगे है। श्रीलंका कोयर उद्योग के लिए प्रसिद्ध है। विश्व नारियल बाजार का आकार 2024 में लगभग 12 अरब डॉलर था और 2030 तक इसके 20 अरब डॉलर तक पहुँचने की संभावना है।अमेरिका यूरोप और जापान में नारियल पानी और ऑर्गेनिक नारियल तेल की मांग तेजी से बढ़ रही है, जिससे यह उद्योग और अधिक वैश्विक बनताजा रहाहै। साथियों बात अगर हम नारियल वृक्ष केवल भोजन और व्यापार ही नहीं, बल्कि पर्यावरण और समाज के लिए भी महत्वपूर्ण होने की करें तो,यह समुद्र किनारे मिट्टी का क्षरण रोकते हैं और तटीय सुरक्षा प्रदान करते हैं। एक नारियल वृक्ष सालाना लगभग 30-35 किलोग्राम कार्बन डाइऑक्साइड सोखता है, जिससे पर्यावरण को शुद्ध बनाने में मदद मिलती है। यह विश्वभर में लगभग 6 करोड़ लोगों को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से रोजगार देता है। गरीब किसानों की जीवनरेखा कहे जाने वाले इस वृक्ष ने करोड़ों लोगों को स्थायी जीविका दी है।फिर भी नारियल खेती पर जलवायु परिवर्तन का गहरा प्रभाव पड़ रहा है। समुद्र स्तर में वृद्धि से तटीय नारियल बागान डूबने लगे हैं। सूखा और अनियमित वर्षा से उत्पादन घट रहा है। कीट और रोगों की संख्या बढ़ी है। इन चुनौतियों से निपटने के लिए एफएओ और एपीसीसी मिलकर नई किस्मों पर शोध कर रहे हैं।भारत नेकेंद्रीय नारियल अनुसंधान संस्थान बनाया है, जबकि श्रीलंका और फिलीपींस ने कोयर और नारियल तेल आधारित उद्योगों में नवाचार को बढ़ावा दिया है।विश्व नारियल दिवस हमें यह याद दिलाता है कि नारियल केवल एक फल नहीं बल्कि भविष्य की सतत जीवन शैली का आधार है। ऑर्गेनिक खेती को बढ़ावा देकर, किसानों को तकनीक और बाजार तक पहुँच प्रदान करके और नारियल आधारित ग्रीन उद्योग विकसित करके हम इस वृक्ष की क्षमता को और अधिक बढ़ा सकते हैं। अंतरराष्ट्रीय सहयोग को मजबूत करना भी आवश्यक है, ताकि छोटे किसान भी वैश्विक बाजार से लाभान्वित हो सकें। साथियों बात अगर हम नारियल का वृक्ष केवल एक पौधा नहीं, बल्कि मानव सभ्यता का सहारा होने की करें तो,यह धर्म में श्रद्धा, संस्कृति में पहचान, विज्ञान में औषधि और अर्थव्यवस्था में उद्योग का आधार है। विश्व नारियल दिवस 2025 हमें यह संदेश देता है कि हमें इसजीवन वृक्ष की रक्षा करनी है और इसे मानवता की समृद्धि के लिए आगे बढ़ाना है। यदि विश्वभर के देश मिलकर नारियल उत्पादन, अनुसंधान और सतत विकास की दिशा में काम करें तो यह वृक्ष आने वाली पीढ़ियों को भी अमृत प्रदान करता रहेगा।नारियल केवल एक फल नहीं, बल्कि संपूर्ण जीवन का प्रतीक है। भारतीय संस्कृति में यह समर्पण और पवित्रता का संदेश देता है, विज्ञान में यह स्वास्थ्य का स्रोत है।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक विजय कुमार शास्त्री ने [illegible] से मुद्रित कर कार्यालय, बी-2/370, सुल्तानपुरी, दिल्ली-86 से प्रकाशित किया सम्पादक : विजय कुमार शास्त्री, मो0 : 09582093548 [illegible] (DELHIN/2010/08862)

उजारनाथ मंदिर के पर्यटन विकास पर होगा एक करोड़ का व्यय

तमकुही राज,कुशीनगर ।

- विधायक के प्रस्ताव पर पर्यटन विभाग ने शासन को भेजी है कार्ययोजना
- बहुउद्देशीय कक्ष, पेयजल व बैठने की सुविधा से श्रद्धालुओं को मिलेगा लाभ

विकास खंड तमकुहीराज के उजारनाथ गांव स्थित प्राचीन शिव मंदिर को पर्यटन के मानचित्र पर विकसित करने की दिशा में बड़ा कदम उठाया गया है। फाजिलनगर विधायक सुरेंद्र सिंह कुशवाहा के प्रस्ताव पर पर्यटन विभाग ने मंदिर परिसर के सौंदर्यीकरण एवं अवस्थापना विकास के लिए शासन से एक करोड़ रुपये की स्वीकृति दिलाई है। इस कार्य के लिए क्षेत्रीय पर्यटन अधिकारी से विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर) मांगी गई थी।

कार्यदाई संस्था सीएंडडीएस (कंस्ट्रक्शन एंड डिजाइन सर्विसेज) के स्थानिक अभियंता (रेजीडेंट इंजीनीयर) गोरखपुर-बस्ती मंडल संदीप चौरसिया ने बताया कि कार्ययोजना के लिए सितंबर माह में धन अवमुक्त होते ही निर्माण कार्य प्रारंभ होगा। प्रस्तावित विकास कार्यों में बहुउद्देशीय कक्ष का निर्माण, लगभग चार सौ वर्ग मीटर क्षेत्र में इंटरलाकिंग सोलर लाइट टाइल्स का कार्य, श्रद्धालुओं के लिए शीतल पेयजल की व्यवस्था तथा बैठने के लिए स्टोन बेंच की स्थापना प्रमुख हैं। विधायक सुरेंद्र कुमार सिंह कुशवाहा ने बताया कि उजारनाथ मंदिर अत्यंत प्राचीन है और यहां विशेषकर महाशिवरात्रि के अवसर पर हजारों की संख्या में श्रद्धालु दर्शन-पूजन के लिए आते है। सुविधाओं के अभाव के कारण श्रद्धालुओं को कठिनाई उठानी पड़ती थी। क्षेत्रीय जनता की मांग पर उन्होंने पर्यटन मंत्री से मिलकर यह प्रस्ताव प्रस्तुत किया था। उन्होंने आश्वासन दिया कि आने वाले समय में क्षेत्र के अन्य प्रमुख मंदिरों का भी पर्यटन विकास कराया जाएगा, जिससे न केवल श्रद्धालुओं को सुविधा मिलेगी बल्कि स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर भी सृजित होंगे। मंदिर के विकास की इस पहल से भाजपा कार्यकर्ताओं और क्षेत्रीय नागरिकों में हर्ष व्याप्त है। उनका मानना है कि पर्यटन सुविधाओं में वृद्धि से मंदिर की आस्था के साथ-साथ क्षेत्र की पहचान को भी नया आयाम मिलेगा।

लेखपाल की पुनः तैनाती के विरुद्ध ग्रामीणों ने डीएम को सौंपा अनुस्मारक पत्र

- गत 25 अगस्त को सौंपे गए शिकायती पत्र पर अब तक कार्रवाई न होने की बात
- शासनादेश के विपरीत तैनाती व चुनाव प्रभावित करने के आरोप

पडरौना,कुशीनगर । तमकुहीराज तहसील के मठिया गांव के ग्रामीणों ने मंगलवार को जिलाधिकारी को अनुस्मारक शिकायती पत्र सौंपकर लेखपाल कमरूज्जमा की तैनाती पर आपत्ति दोहराई। ग्रामीणों का कहना है कि 25 अगस्त को पहले ही डीएम को शिकायती पत्र सौंपा गया था, लेकिन उस पर अब तक कोई कार्रवाई नहीं हुई है। ग्रामीणों ने जनहित और न्यायहित में सख्त कार्रवाई की मांग की है। ग्रामीणों का आरोप है कि लेखपाल वर्ष 2018 से 2022 तक गांव में तैनात रहे। शासनादेश के अनुसार तीन वर्ष की अवधि पूरी होने के बाद उनका स्थानान्तरण कर दिया गया था। इसके बावजूद वर्ष 2025 में धन-बल और प्रभाव से उन्होंने पुनः उक्त गांव में ही तैनाती करा ली, जो पूरी तरह नियमविरुद्ध है। ग्रामीणों का कहना है कि इस दौरान वह कुछ दलाल किस्म के लोगों से मिले रहे और उन्हीं के माध्यम से अवैध धनउगाही की। पंचायत चुनाव नजदीक होने से ग्रामीणों की आशंका है कि लेखपाल अब पक्ष विशेष के लिए चुनाव को प्रभावित करने की कोशिश कर रहे है। इसी सिलसिले में हाल ही में उन्होंने गांव आकर अपने समर्थकों से हस्ताक्षरित पत्र तैयार कराया, जिसमें लिखा गया कि उनकी तैनाती से किसी को कोई परेशानी नहीं है। ग्रामीणों का कहना है कि यह लामबंदी सरकारी सेवक आचरण नियमावली का उल्लंघन है और निष्पक्ष प्रशासनिक व्यवस्था के खिलाफ है।लग्रामीणों ने जिलाधिकारी से मांग की है कि मामले की उच्चस्तरीय जांच कराई जाए और दोषी पाए जाने पर लेखपाल के विरुद्ध तत्काल निलंबन व स्थानान्तरण की कार्रवाई की जाए। उनका कहना है कि यदि समय रहते कार्रवाई नहीं हुई तो गांव का निष्पक्ष माहौल और लोकतांत्रिक प्रक्रिया प्रभावित होगी।

प्रबंधक सभा केज्ञापन का विरोध 4 सितंबर 2025 को

कुशीनगर ।

उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षक संघ चेतनारायण गुट के आह्वान पर 4 सितंबर 2025 को माध्यमिक शिक्षक अपने विद्यालय मेअंतिम वादन के पश्चात प्रबंधक सभा द्वारा मुख्यमंत्री को दिए गए 12 सूत्रीय ज्ञापन का विरोध करेंगे, प्रबंधक सभा अपने ज्ञापन में संगठन द्वारा विगत 50 वर्षों में अर्जित की गई उपलब्धियां को खंडित करना चाहता है इसके विरोध में माध्यमिक शिक्षक अपने विद्यालय में अंतिम वादन के पश्चात मुख्य द्वार पर तख्तियों पर विरोध लिखकर प्रबंधक सभाके ज्ञापन का विरोध करेंगे। इस बात की जानकारी उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षक संघ के जिलाध्यक्ष अशोक कुमार चौरसिया व जिला मंत्री जितेंद्र मणि त्रिपाठी द्वारा संयुक्त रूप में दी गई है।

घाघरा किनारे एनडीआरएफ का मॉक ड्रिल, ग्रामीणों को सिखाई बाढ़ से जंग की रणनीति

देवरिया। बरहज तहसील क्षेत्र में बाढ़ आपदा से निपटने की तैयारी को लेकर मंगलवार को घाघरा नदी के गौरा घाट पर एनडीआरएफ की टीम ने व्यापक मॉक ड्रिल किया। यह अभ्यास जिलाधिकारी दिव्या मित्तल के निर्देश, उपमहानिरीक्षक मनोज कुमार शर्मा के मार्गदर्शन तथा एनडीआरएफ गोरखपुर के उपकमांडेंट कुलदीप सिंह के नेतृत्व में संपन्न हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता अपर जिलाधिकारी (वित्त एवं राजस्व) राम शंकर ने की। अभ्यास के दौरान जवानों ने ग्रामीणों को वास्तविक परिस्थितियों की झलक दिखाते हुए पांच तरह की आपदा स्थितियों का जीवंत प्रदर्शन किया। नदी का जलस्तर अचानक बढ़ने और ग्रामीणों के फंस जाने की स्थिति में जवानों ने बोटों की मदद से लोगों को सुरक्षित स्थानों तक पहुंचाया। इसी क्रम में डूबते यात्रियों का बचाव, घायल व्यक्तियों को प्राथमिक उपचार तथा वैज्ञानिक पद्धति से सीपीआर देने की तकनीक भी प्रदर्शित की गई। गोताखोरों ने नदी में लापता व्यक्ति की खोज का तरीका दिखाया, वहीं क्षमता से अधिक यात्रियों को ले जा रही नाव के पलट जाने पर त्वरित बचाव कार्य कर ग्रामीणों को सचेत किया गया। इसके साथ ही आम लोगों को घरेलू सामान की मदद से अस्थायी लाइफ जैकेट बनाने और उनका उपयोग कर जान बचाने की जानकारी भी दी गई। अपर जिलाधिकारी राम शंकर ने इस अवसर पर कहा कि बरहज क्षेत्र हर वर्ष बाढ़ आपदा से प्रभावित होता है। ऐसे मॉक ड्रिल से ग्रामीणों का आत्मविश्वास बढ़ता है और संकट की घड़ी में वे न केवल स्वयं को सुरक्षित रख सकते हैं बल्कि दूसरों की मदद भी कर सकते हैं। इस मौके पर उप जिलाधिकारी बरहज विपिन द्विवेदी, तहसीलदार अरुण कुमार, अधिशासी अधिकारी नगर पंचायत गौरा बरहज, नायब तहसीलदार रविंद्र कुमार मौर्य सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी मौजूद रहे। एनडीआरएफ निरीक्षक सुधीर कुमार की अगुवाई में 30 जवानों ने अभ्यास में हिस्सा लिया, जबकि सैकड़ों ग्रामीणों ने इसे देखा और जीवन रक्षा से जुड़े महत्वपूर्ण उपाय सीखे।

पडरौना चीनी मिल चलाए जाने को लेकर कृषक प्रतिधियों एवं कर्मचारी प्रतिनिधियों की जिला प्रशासन के साथ बनी सहमति

कुशीनगर ।

- 10 से 12 दिनों के अंदर चीनी मिल संबंधी सभी जानकारी एकत्रित कर अगली कार्यवाही होगी शुरू-डीएम
- चीनी मिल के भूमि पर अवैध कब्जा करने वालों को चिन्हित कर खाली कराए जाने का डीएम ने दिए निर्देश

जिलाधिकारी महेंद्र सिंह तंवर की अध्यक्षता में जनपद के प्रतिनिधित्व करने वाले कृषकों एवं पडरौना चीन मिल के कर्मचारियों के प्रतिनिधियों के साथ एक आवश्यक बैठक कलेक्ट्रेट सभागार में संपन्न की गई। जिलाधिकारी ने कहा कि पडरौना चीनी मिल को चालू कराने के प्रयास अंतर्गत आज की बैठक की गई है, उन्होंने सभी को आश्वस्त किया कि प्रयास का बेहतर परिणाम होंगे। उन्होंने कहा कि किसानों का बकाया गन्ना मूल्य का भुगतान, मिल कर्मचारियों के बकाया वेतन मिले तथा क्षेत्र के किसानों में खुशहाली लाकर रोजगार के अवसर प्रदान किए जाने का प्रयास किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि मिल चालू कराने हेतु धन की आवश्यकता होगी उसकी व्यवस्था कहां से की जाएगी, क्या जो व्यक्ति मिल चलाएगा वो बकाया भुगतान करेगा, मिल चालू कराने में कुल कितना व्यय होगा, आदि के संबंध में उन्होंने कहा कि सभी आंकड़े संकलित कर आगामी बैठकों में इसकी जानकारी दी जाएगी। जिलाधिकारी ने मिल कर्मचारियों एवं किसान बंधुओं के समक्ष अपनी बात रखते हुए कहा कि यदि किसानों एवं मिल कर्मचारियों के बकाया का भुगतान कर दिया जाय तो इस बात पर सभी की सहमति है कि जो भी कोर्ट वगैरह में अपील दाखिल की गई है उसे वापस लेने हेतु सहमत हैं, जिस पर कृषक प्रतिनिधियों द्वारा द्वारा सहमति व्यक्त की गई। जिलाधिकारी ने कहा कि मा0 मुख्यमंत्री जी की इच्छा है कि कृषक हित में पडरौना मिल को चालू कराया जाय। कृषक प्रतिनिधियों द्वारा प्रशासन का हर तरह से सहयोग करने, एवं जो भी केस कोर्ट वगैरह में है उसे वापस लेने पर सहमति व्यक्त की गई। जिलाधिकारी ने कहा कि एक तरफ समझौता होगा दूसरी तरफ बकाए की धनराशि अंतरित कर दी जाएगी। व्यवहारिक दृष्टिकोण से जो भी देय धनराशि है उसका संकलन कर आगामी 10 से 12 दिनों में दूसरी बैठक में पूर्ण विवरण प्रस्तुत किया जाएगा। उन्होंने मिल कि जमीन पर हुए अतिक्रमण को खाली कराए जाने के क्रम में सभी कृषक बंधुओं को प्रशासन के साथ सहयोग करने की अपेक्षा की गई, जिलाधिकारी ने उप जिलाधिकारी पडरौना को निर्देशित किया कि गलत तरीके से जो भी कब्जा किए हैं उसे चिन्हित कर खाली कराए जाने हेतु निर्देशित किया गया। चीनी मिल के कुल भूमि की जानकारी लेने के क्रम में बताया गया कि 54 एकड़ के लगभग भूमि है। इस क्रम में मिल कर्मचारियों द्वारा मिल से संबंधित आवश्यक जानकारी एवं प्रपत्र उपलब्ध कराए गए। कृषक प्रतिनिधि द्वारा इस अवसर पर आश्वस्त किया गया कि इस कार्य हेतु हर मजदूर, किसान जिला प्रशासन के साथ खड़ा है । जिलाधिकारी ने कहा कि एक साल के अंदर चीनी मिल को चालू कराने का प्रयास किया जाएगा। कृषक पक्षकार बुंदल पांडेय द्वारा इस अवसर पर कहा गया कि किसी भी किसान द्वारा किसी भी कोर्ट में कोई अपील/केस नहीं किया गया है,जनपद कर हर किसान चाहता है कि चीनी मिल किसी तरह चालू हो जाय। जिलाधिकारी ने कहा कि ढाढा चीनी मिल द्वारा प्लांट लगाए जाने हेतु 20 परिवारों द्वारा भूमि सर्किल रेट के चार गुना मुआवजा दिए जाने के बाद भी सहमति नहीं बनने के क्रम में कृषक प्रतिनिधियों को अवगत कराते हुए इस कार्य में सहयोग की अपेक्षा की गई जिस पर एक डेढ़ माह के अंदर वार्ता कर मामले का निस्तारण करा लिए जाने का आश्वासन कृषक प्रतिनिधियों द्वारा दिया गया । इस अवसर पर अपर जिलाधिकारी वैभव मिश्रा, उप जिलाधिकारी पडरौना ऋषभ पुंडीर, कृषक प्रतिनिधि छोटेलाल सिंह, संजय मल्ल, बुंदल पांडेय,राकेश दत्त शुक्ला,मिल कर्मचारी मनोज श्रीवास्तव, टी0 एन सिंह,महेंद्र सिंह, ओम प्रकाश, कामेश्वर तिवारी के साथ लेखपाल योगेंद्र गुप्ता आदि उपस्थित रहे।

पुलिस का सख्त अभियान : 50 स्थानों पर 663 संदिग्धों की चेकिंग, महिलाओं की सुरक्षा पर फोकस

देवरिया। पुलिस अधीक्षक विक्रान्त वीर के निर्देशन में पुलिस ने शनिवार को महिला सुरक्षा को लेकर बड़ा अभियान चलाया। जिले के सभी थानों की एंटी रोमियो स्क्वॉड और मिशन शक्ति टीमों ने एक साथ मैदान में उतरकर स्कूल, कॉलेज, पार्क और अन्य सार्वजनिक स्थलों पर व्यापक चेकिंग अभियान चलाया। इस दौरान 23 पुलिस टीमों ने जिले भर में 50 स्थानों पर छापेमारी की और कुल 663 संदिग्ध व्यक्तियों की तलाशी ली। संदिग्ध गतिविधियों में लिप्त पाए गए युवकों को मौके पर ही चेतावनी दी गई, साथ ही आगे गड़बड़ी की स्थिति में सख्त कानूनी कार्रवाई करने की बात साफ कही गई। अभियान के दौरान छात्राओं और महिलाओं से संवाद कर उन्हें महिला हेल्पलाइन नंबर 1090, 181, 112 समेत अन्य महत्वपूर्ण सेवाओं की जानकारी दी गई। साथ ही आत्मरक्षा के लिए बुनियादी सुझाव भी साझा किए गए। महिला थाना की प्रभारी निरीक्षक निशा कुमारी और उपनिरीक्षक खुशबु सिंह ने भटवलिया चौराहे पर चेकिंग अभियान का नेतृत्व किया। वहीं, थाना श्रीरामपुर की टीम ने श्रीकृष्ण इंटर कॉलेज, हाता में छात्राओं से संवाद स्थापित कर सुरक्षा संबंधी दिशा-निर्देश दिए। इसी प्रकार थाना भाटपार रानी की पुलिस टीम ने क्षेत्र के विभिन्न स्कूल-कॉलेजों के आसपास सघन चेकिंग की। पुलिस की इस कार्रवाई ने महिलाओं और बच्चियों में सुरक्षा की भावना मजबूत की है। पुलिस अधीक्षक विक्रान्त वीर ने कहा कि किसी भी परिस्थिति में महिलाओं की गरिमा और सुरक्षा से समझौता नहीं किया जाएगा। जिले के सभी थानों को निर्देशित किया गया है कि ऐसे अभियानों को निरंतर चलाया जाए ताकि हर महिला और बालिका निर्भय होकर अपने कार्य कर सके।

डिवाइडर पर तड़पते रहे हादसे में घायल पीएसी जवान, पानी मांगते-मांगते तोड़ा दम; आठ मई को हुई थी अभिषेक की शादी

गोरखपुर ।

वाराणसी हाईवे पर गोरखपुर के बेलीपार थाना इलाके में महावीर छपरा के पास सोमवार सुबह सड़क हादसे में 30वीं वाहिनी पीएसी गोंडा में तैनात कांस्टेबल अभिषेक दुबे (27) की मौत हो गई। वहीं बाइक पर पीछे बैठे पीआरडी जवान मारकंडेय गंभीर रूप से घायल हो गया। पुलिस ने दोनों को जिला अस्पताल पहुंचाया, जहां से मेडिकल कॉलेज रेफर किया गया। लेकिन रास्ते में ही अभिषेक ने दम तोड़ दिया। वह वर्तमान में गोरखनाथ मंदिर की सुरक्षा में तैनात थे। हादसे में जान गंवाने वाले अभिषेक दुबे गोला थाना इलाके के खिरकिटा दुबे के रहने वाले थे। उनके पिता अश्वनी दुबे यूपी पुलिस में श्रीवास्ती जिले में इंस्पेक्टर के पद पर तैनात हैं। जबकि बड़ा भाई सोनू घर पर रहकर कारोबार देखते हैं। भाई सोनू ने बताया कि अभिषेक 30वीं वाहिनी पीएसी गोंडा में आरक्षी के पद पर तैनात थे। जहां से उन्हें गोरखनाथ मंदिर की सुरक्षा में भेजा गया था। सोमवार को वह घर से गोरखनाथ मंदिर जाने के लिए बुलेट से निकले थे। रास्ते में उन्हें बेलीपार थाने का पीआरडी जवान मार्कंडेय मिल गए। लिफ्ट मांगने पर अभिषेक ने बुलेट पर पीछे बैठा लिया। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, अभिषेक बेलीपार थाना इलाके में महावीर छपरा के पास पहुंचे ही थे कि उनकी बाइक अनियंत्रित होकर डिवाइड पर चढ़ गई। स्लेटर फंसे होने के चलते स्पीड और तेज हो गई।

जिससे दोनों हाइवे पर गिरकर गंभीर रूप से घायल हो गए। राहगीरों की सूचना पर मौके पर पहुंची पुलिस उन्हें तत्काल एंबुलेंस से जिला अस्पताल भिजवाया, जहां गंभीर स्थिति देख डॉक्टरों ने मेडिकल कॉलेज रेफर कर दिया। एंबुलेंस अभी मेडिकल कालेज पहुंच भी नहीं पाई थी कि रास्ते में ही अभिषेक ने दम तोड़ दिया। वहीं पीआरडी जवान की हालत गंभीर बनी हुई है। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, हादसे के बाद अभिषेक काफी देर तक सड़क पर तड़पते रहे। राहगीरों ने अभिषेक को घायल अवस्था में डिवाइडर पर ही लेटा दिया था। थानाप्रभारी जब मौके पर पहुंचे तो वह बार-बार पानी मांग रहे थे। यही नहीं हादसे की जानकारी देने के लिए उन्होंने अपने घर का नंबर दिया। कॉल रिसीव न होने पर गांव के दूसरे शख्स का नंबर दिया। इसके बाद थाना प्रभारी ने घटना की जानकारी परिजनों को दी। परिजन आनन-फानन मेडिकल कॉलेज पहुंचे, लेकिन तब तक अभिषेक की सांसें थम चुकी थीं। इसके बाद वहां चीख पुकार मच गई। परिजनों ने बताया कि बीते एक मई को अभिषेक का तिलक और 8 मई को गोला क्षेत्र की रहने वाली युवती से शादी हुई थी। हादसे में पति के घायल होने की सूचना पर वह परिजनों को बार-बार कॉल करके पति की हालत जानने का प्रयास करती रहीं।

दिल्ली दंगा मामला: शरजील इमाम और उमर खालिद को झटका, हाईकोर्ट ने खारिज की जमानत याचिका

नई दिल्ली।

दिल्ली हाईकोर्ट ने आज 2020 के दिल्ली दंगों की बड़ी साजिश से जुड़े मामले में 18 में से 10 आरोपियों की ज़मानत याचिका खारिज कर दी। आरोपियों में शरजील इमाम, उमर खालिद सहित कई अन्य शामिल हैं। इन सभी की गिरफ्तारी को पाँच साल बीत चुके हैं। न्यायमूर्ति नवीन चावला और न्यायमूर्ति शालिंदर कौर की खंडपीठ ने उनकी ज़मानत याचिकाओं पर फैसला सुनाया। अन्य आरोपियों में आतहर खान, अब्दुल खालिद सैफी, मोहम्मद सलीम खान, शिफाउर रहमान, मीरान हैदर, गुलफिशा फ़ातिमा और शादाब अहमद शामिल हैं। इससे पहले जुलाई में पीठ ने ज़मानत याचिकाओं पर आदेश सुरक्षित रखते हुए अभियोजन पक्ष से मौखिक रूप से पूछा था, पाँच साल हो गएज अभी तक आरोप तय करने पर बहस भी पूरी नहीं हुई 700 गवाह हैं, एक व्यक्ति को कितने समय तक अंदर रखा जा सकता है? हम आपको बता दें कि इस मामले में आरोप है कि 18 लोगों ने पूर्वी दिल्ली में 23 से 25 फरवरी 2020 के बीच दंगे कराने की पूर्व-नियोजित साज़िश रची थी। इनके खिलाफ आईपीसी, सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान से बचाव अधिनियम, शस्त्र अधिनियम और यूएपीए के तहत मुकदमे दर्ज हैं। हम आपको बता दें कि उत्तर-पूर्वी दिल्ली दंगों को पाँच साल बीत चुके हैं। ज़िला पुलिस द्वारा दंगा, आगज़नी और अवैध भीड़ से जुड़े 695 मामलों में से अब तक 109 मामलों में अदालतें फैसला सुना चुकी हैं। फरवरी 2020 में 24 से 26 तारीख़ के बीच भड़की साम्प्रदायिक हिंसा में 53 लोग मारे गए थे, 500 से अधिक लोग घायल हुए थे और करोड़ों की संपत्ति को नुकसान पहुँचा था। मार्च 2020 में दिल्ली क्राइम ब्रांच ने इस मामले में प्राथमिकी दर्ज की थी, जिसकी जाँच स्पेशल सेल कर रही है। उमर खालिद उन कई युवा कार्यकर्ताओं में शामिल है जिन पर दिल्ली दंगों की हिंसा से जुड़े मामले दर्ज किए गए हैं। इसके अलावा, 18 आरोपियों में से कार्यकर्ता सफ़ूरा ज़रगर को जून 2020 में ज़मानत मिल गई थी, जबकि एक अन्य आरोपी फ़ैज़ान को अक्टूबर 2020 में ज़मानत दी गई थी। तीन अन्य कार्यकर्ताओं– नताशा नरवाल, देवांगना कलीता और आसिफ़ इक़बाल तन्हा को जून 2021 में दिल्ली हाईकोर्ट ने ज़मानत दी थी। कांग्रेस की पूर्व पार्षद इशरत जहाँ को मार्च 2022 में इस मामले में ज़मानत दी गई थी। एक अन्य आरोपी सलीम मलिक की ज़मानत अर्ज़ी अप्रैल 2024 में दिल्ली हाईकोर्ट ने खारिज कर दी थी। आम आदमी पार्टी का पूर्व पार्षद ताहिर हुसैन भी इस मामले में अभी हिरासत में है। हम आपको बता दें कि 2020 के उत्तर-पूर्वी दिल्ली दंगे आधुनिक भारत के सबसे गंभीर साम्प्रदायिक दंगों में गिने जाते हैं। तीन दिनों तक फैली इस हिंसा में 53 लोगों की जान गई थी, सैंकड़ों घायल हुए थे और करोड़ों की संपत्ति नष्ट हो गई थी। अब पाँच साल बाद भी इस प्रकरण से जुड़े कई मामले न्यायिक प्रक्रिया में लंबित हैं। देखा जाये तो दिल्ली दंगे केवल एक आपराधिक मामला नहीं, बल्कि एक राजनीतिक और सामाजिक परिघटना भी है। सरकार और एजेंसियों का तर्क है कि यह हिंसा एक पूर्व नियोजित साज़िश थी, जबकि आलोचकों का मानना है कि कठोर क़ानूनों का इस्तेमाल कर असहमति की आवाज़ों को दबाया गया है।

पंजाब के 12 जिलों में बाढ़, 29 लोगों की मौत

उत्तराखंड में स्कूल बंद; दिल्ली में यमुना का जलस्तर बढ़ा, कई कॉलोनियां खाली कराई गईं

नई दिल्ली ।

पंजाब, हिमाचल, उत्तराखंड, जम्मू-कश्मीर, हरियाणा, दिल्ली समेत उत्तर भारत में बारिश जारी है। पंजाब के पठानकोट, फिरोजपुर समेत 12 जिले एक हफ्ते से बाढ़ की चपेट में हैं। राज्य में 1,312 गांवों के 2.56 लाख से ज्यादा लोग बाढ़ से प्रभावित हैं। अब तक 29 लोगों की मौत हो गई है। भिवानी, हिसार, सिरसा, यमुनानगर, कुरुक्षेत्र और पंचकूला में आज कुछ स्कूलों में छुट्टी कर दी गई है। गुरुग्राम के दफ्तरों में कर्मचारियों को वर्क फ्रॉम होम के आदेश जारी किए गए हैं। उधर, दिल्ली में यमुना नदी के खतरे के निशान को पार करने के बाद मंगलवार को ट्रांस-यमुना क्षेत्र की कई कॉलोनियों में पानी घुस गया। यमुना बाजार, मयूर विहार और आसपास के इलाकों की कॉलोनियों में रहने वाले लोगों को अपना जरूरी सामान लेकर राहत शिविरों में जाने की अपील की है। उत्तराखंड के सभी 13 जिलों में स्कूल-कॉलेज बंद हैं। सोमवार को उत्तराखंड में केदारनाथ मार्ग पर लैंडस्लाइड से दो लोगों की मौत हो गई और 6 घायल हो गए। भारी बारिश के कारण चार धाम यात्रा 5 सितंबर तक स्थगित कर दी गई है। हिमाचल प्रदेश में इस साल अगस्त की बारिश ने 76 साल का रिकॉर्ड तोड़ दिया। बीते महीने सामान्य से 68 फीसदी ज्यादा (256.8 एमएम) बारिश हुई। यह 1949 के बाद से सबसे ज्यादा है। शिमला में पिछले 24 घंटे में लैंडस्लाइड और मकान गिरने से 4 लोगों की मौत हो गई है। मौसम विभाग ने मंगलवार को हिमाचल के 6 जिलों में बहुत तेज बारिश का रेड अलर्ट है। 8 जिलों में स्कूल-कॉलेज बंद रहेंगे।

-: हरियाणा ने दिखाया बड़ा दिल :-

बाढ़ से जूझ रहे पंजाब और जम्मू-कश्मीर की मदद, दोनों राज्यों को 5-5 करोड़ की सहायता

चंडीगढ़ ।

पंजाब में लगातार बारिश और बाढ़ ने भारी तबाही मचाई है, जिससे जन-धन, फसलों, पशुधन और बुनियादी ढांचे को गंभीर नुकसान पहुंचा है। यही हाल जम्मू-कश्मीर का भी है। दोनों ही राज्य इस समय भारी प्राकृतिक आपदा से जूझ रहे हैं। इन मुश्किल हालातों में पड़ोसी राज्य हरियाणा ने मदद के लिए हाथ बढ़ाए हैं। हरियाणा ने पंजाब व जम्मू-कश्मीर के लिए 5-5 करोड़ रुपये की आर्थिक सहायता देने की पेशकश की है। केंद्रीय मंत्री व हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने कहा कि पंजाब और जम्मू-कश्मीर में बारिश व बाढ़ से उत्पन्न हालात बेहद दुखद है। इस संकट की घड़ी में हरियाणा सरकार और प्रदेश की जनता प्रभावित परिवारों के साथ मजबूती से खड़े हैं। मुख्यमंत्री राहत कोष से पंजाब और जम्मू-कश्मीर के लिए 5-5 करोड़ रुपये की सहायता राशि भेजी गई है। यह मदद राहत और बचाव कार्यों में सहायक होगी और प्रभावित परिवारों तक त्वरित सहायता पहुंचाने में मदद करेगी। हरियाणा सरकार का यह प्रयास है कि जरूरत पड़ने पर आगे भी हर संभव सहयोग किया जाए। हम सभी प्रभावित परिवारों को भरोसा दिलाते हैं कि हरियाणा उनकी सहायता के लिए हमेशा तत्पर रहेगा। इस कठिन समय में हम सब मिलकर इस आपदा का सामना करेंगे। हरियाणा, पंजाब और जम्मू-कश्मीर एकजुट होकर हम इस संकट को पार करेंगे।

पंजाब में बाढ़ पीड़ितों की हालत देख रो पड़े सीएम मान , लोगों को दी हिम्मत

फिरोजपुर । पंजाब में बाढ़ ने तबाही मचा रखी है और लोग त्राहि-त्राहि कर रहे हैं। चारों तरफ हालात बेहद गंभीर बने हुए हैं। इसी बीच मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान ने आज फिरोजपुर के बाढ़ प्रभावित इलाकों का दौरा किया। उन्होंने बाढ़ की मार झेल रहे सरहदी गांवों के लोगों से मुलाकात की और उनकी परेशानियां सुनीं। इतने गंभीर हालात देखकर और लोगों की बदहाली देखकर मुख्यमंत्री मान की आंखों में भी आंसू आ गए। बाढ़ पीड़ित एक महिला ने अपना दुख सुनाते हुए कहा कि सब कुछ बह जाएगा और हमारा कुछ भी नहीं बचेगा। इस पर मुख्यमंत्री भावुक होकर बोले कि सब कुछ ठीक हो जाएगा, यह प्राकृतिक आपदा है और सब कुछ मुझ पर छोड़ दो। बताने योग्य है कि मुख्यमंत्री मान न केवल बाढ़ प्रभावित इलाकों का दौरा कर रहे हैं, बल्कि बाढ़ प्रबंधन पर भी व्यक्तिगत रूप से नजर रख रहे हैं। उन्होंने अधिकारियों को बाढ़ पीड़ितों की हर संभव मदद करने के सख्त निर्देश दिए हैं। आज मुख्यमंत्री की ओर से एक उच्च स्तरीय बैठक भी की जाएगी जिसमें पूरे राज्य में चल रहे राहत कार्यों की स्थिति का जायजा लिया जाएगा।

सीएम योगी का बड़ा एक्शन! छात्रों और एबीवीपी कार्यकर्ताओं पर लाठीचार्ज करने वाले सीओ सस्पेंड, इंस्पेक्टर लाइन हाजिर

बाराबंकी। उत्तर प्रदेश के बाराबंकी जिले में छात्रों और एबीवीपी कार्यकर्ताओं पर हुए लाठीचार्ज के मामले में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सख्त रुख अपनाया है। सीएम ने घटना का तत्काल संज्ञान लिया और जिम्मेदार पुलिसकर्मियों पर कार्रवाई के निर्देश दिए। सीओ हर्षित चौहान सस्पेंड कर दिए गए हैं। नगर कोतवाली इंस्पेक्टर और गदिया चौकी इंचार्ज को लाइन हाजिर कर दिया गया है। आईजी अयोध्या रेंज प्रवीण कुमार को पूरे मामले की जांच सौंपी गई है। अयोध्या मंडलायुक्त को रामस्वरूप यूनिवर्सिटी की डिग्री वैधता की जांच करने के आदेश दिए गए हैं। बाराबंकी के रामस्वरूप यूनिवर्सिटी में एलएलबी कोर्स की मान्यता रद्द हो चुकी थी, लेकिन फिर भी वहां एडमिशन जारी थे। इसको लेकर छात्रों और एबीवीपी कार्यकर्ताओं ने प्रदर्शन किया। प्रदर्शन के दौरान पुलिस से झड़प हो गई और हालात बिगड़ने पर पुलिस ने लाठीचार्ज कर दिया। इस घटना में 25 से ज्यादा लोग घायल हो गए। कई छात्र गंभीर हालत में अस्पताल में भर्ती कराए गए। छात्रों की पिटाई का मामला सामने आने के बाद सोशल मीडिया पर भी नाराजगी देखी गई। सरकार के एक मंत्री खुद घायलों से मिलने अस्पताल पहुंचे। इसके बाद मुख्यमंत्री योगी ने तुरंत एक्शन लिया और पुलिस अधिकारियों पर कार्रवाई की। वहीं योगी सरकार ने साफ कर दिया है कि छात्रों पर अत्याचार या पुलिस की मनमानी अब बर्दाश्त नहीं होगी। जांच में जो भी दोषी मिलेगा, उसके खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

सिर्फ आधार कार्ड ही अकेले नागरिकता का सबूत नहीं, एसआईआर पर सुनवाई के दौरान सुप्रीम टिप्पणी

नई दिल्ली । सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को साफ कर दिया कि आधार कार्ड को अकेले नागरिकता का सबूत मानना संभव नहीं है। अदालत ने यह टिप्पणी बिहार में मतदाता सूची के विशेष पुनरीक्षण (एसआईआर) के दौरान सामने आए विवाद पर सुनवाई करते हुए दी। जस्टिस सूर्यकांत और जस्टिस जॉयमाल्या बागची की बेंच ने कहा, आधार सिर्फ पहचान पत्र है, नागरिकता का सबूत नहीं। चुनाव आयोग के पास मतदाता सूची में नाम जोड़ने के लिए आधार के साथ-साथ अन्य दस्तावेज भी मांगे जा सकते हैं। कोर्ट ने दोहराया कि आधार का दर्जा कानून और पूर्व फैसले (पुट्टास्वामी फैसला, 2018) से आगे नहीं बढ़ाया जा सकता। आधार अधिनियम (अनुभाग 9) के तहत आधार नंबर अपने आप में नागरिकता या निवास का सबूत नहीं है। साल 2018 पुट्टास्वामी केस (5-न्यायाधीशों की पीठ) के फैसले के अनुसार, आधार नंबर से न तो नागरिकता साबित होती है, न ही निवास का अधिकार मिलता है। मामले की सुनवाई में आरजेडी के वकील प्रशांत भूषण ने कहा कि चुनाव आयोग 65 लाख नाम हटाए जाने के बाद भी आधार को अकेले पहचान पत्र मानकर नए नाम नहीं जोड़ रहा। इस पर कोर्ट ने साफ किया, हम आधार का दर्जा बढ़ाकर नागरिकता प्रमाण पत्र नहीं बना सकते। अन्य दलों ने भी यही मांग उठाई कि आधार को सीधा नागरिकता का सबूत माना जाए, लेकिन बेंच ने सवाल किया, आधार पर इतना जोर क्यों? हम ऐसा कोई आदेश नहीं देंगे कि आधार नागरिकता का अंतिम प्रमाण है। वहीं चुनाव की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता राकेश द्विवेदी ने कहा, बिहार के कुछ जिलों में आधार कवरेज 140% है। इसका मतलब है कि बड़े पैमाने पर फर्जी पहचान पत्र बने हुए हैं। केंद्र सरकार ने भी बताया कि कुछ राज्यों में अवैध बांग्लादेशी और रोहिंग्या लोगों ने गलत तरीके से आधार कार्ड बनवा लिए हैं। राजनीतिक दलों से सुप्रीम कोर्ट ने कहा, अपने बूथ लेवल एजेंट और कार्यकर्ताओं को सक्रिय कीजिए। जिनका नाम गलत तरीके से हटाया गया है, उन्हें बूथ लेवल अधिकारियों के सामने दावा दाखिल करने में मदद की जाए।

के कविता के खिलाफ बीआरएस का एक्शन, पार्टी से तत्काल प्रभाव से किया गया निलंबित

नई दिल्ली। भारत राष्ट्र समिति (बीआरएस) ने मंगलवार को अपनी एमएलसी के. कविता को तत्काल प्रभाव से पार्टी से निलंबित कर दिया। यह निर्णय उनके पिता, तेलंगाना के पूर्व मुख्यमंत्री और पार्टी अध्यक्ष के. चंद्रशेखर राव ने लिया। उन्होंने अनुशासनात्मक कार्रवाई का कारण उनकी हालिया टिप्पणियों और गतिविधियों को बताया जो पार्टी की नीतियों और सिद्धांतों के विरुद्ध थीं। बीआरएस ने ट्वीट किया कि पार्टी नेतृत्व इस मामले को गंभीरता से ले रहा है क्योंकि पार्टी एमएलसी के. कविता का हालिया व्यवहार और चल रही पार्टी विरोधी गतिविधियां बीआरएस पार्टी को नुकसान पहुँचा रही हैं। पार्टी अध्यक्ष के. चंद्रशेखर राव ने के. कविता को तत्काल प्रभाव से पार्टी से निलंबित करने का निर्णय लिया है। कविता का निलंबन बीआरएस के भीतर एक बड़ी घटना है, जो ऐसे समय में हुआ है जब पार्टी पहले से ही आंतरिक चुनौतियों से जूझ रही है। यह कदम हफ्तों से बढ़ते तनाव के बाद उठाया गया है। निलंबन से ठीक एक दिन पहले, उन्होंने केसीआर की छवि खराब करने के लिए पार्टी के सहयोगियों पर खुलेआम आरोप लगाकर बीआरएस में खलबली मचा दी थी। उन्होंने वरिष्ठ नेता टी हरीश राव और पूर्व सांसद मेघा कृष्ण रेड्डी पर अपने पिता पर भ्रष्टाचार का ठप्पा लगाने का आरोप लगाया और हरीश राव तथा संतोष कुमार पर उन्हें दरकिनार करने की साज़िश रचने का आरोप लगाया। 22 अगस्त को, कविता को तेलंगाना बोग्गु गनी कार्मिक संघम (टीबीजीकेएस) के मानद अध्यक्ष पद से अचानक हटा दिया गया, जबकि वह विदेश में थीं। उन्होंने पार्टी के अंदरूनी सूत्रों पर उनके खिलाफ साज़िश रचने का आरोप लगाया और कहा कि उनका निष्कासन राजनीति से प्रेरित था।

पीएम बोले- कांग्रेस-आरजेडी ने मेरी मां को गाली दी- यह देश की हर मां का अपमान, ये लोग जहां मिलें उनका विरोध करें

***एनडीए ने 4 सितंबर को बिहार बंद बुलाया,**

***पीएम मोदी की मां पर अभद्र टिप्पणी के खिलाफ प्रदर्शन**

***ये गालियां मेरी मां का नहीं, बल्कि हर मां-बेटी का अपमान है,**

***माई के स्थान देवता-पीतर से भी ऊपर होला- पीएम मोदी**

नई दिल्ली ।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मंगलवार वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिये बिहार राज्य जीविका निधि साख सहकारी संघ लिमिटेड के उद्घाटन कार्यक्रम में हिस्सा लिया। इस कार्यक्रम में बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार, उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी और विजय कुमार सिन्हा भी मौजूद रहे। प्रधानमंत्री ने 105 करोड़ रुपए की राशि को जीविका निधि में ट्रांसफर किया। कार्यक्रम में बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने कहा, आज प्रधानमंत्री मोदी जीविका निधि का शुभारंभ कर रहे हैं। इस कार्य से स्वयं सहायता समूह की जीविका दीदीयों को ऋण राशि प्राप्त करने में सुविधा होगी। राज्य सरकार ने इस कार्य के लिए 1 हजार करोड़ रुपये स्वीकृत किए हैं।

बिहार की माताओं-बहनों को मिलेगी नई सुविधा

वहीं, प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, आज मंगलवार के दिन बहुत मंगल कार्य की शुरुआत हो रही है। बिहार की माताओं- बहनों को आज एक नई सुविधा मिलने जा रही है- जीविका निधि साख सहकारी संघ। इससे गांव-गांव में जीविका से जुड़ी बहनों को अब और आसानी से पैसा मिलेगा। उन्हें आर्थिक मदद मिलेगी। उन्होंने आगे कहा, मुझे ये देखकर खुशी हो रही है कि जीविका निधि की व्यवस्था पूरी तरह डिजिटल है। मैं बिहार की माताओं-बहनों को बहुत बधाई देता हूं और इस अद्भुत पहल के लिए मैं नीतीश कुमार और बिहार की एनडीए सरकार का भी अभिनंदन करता हूं।

सशक्त महिलाएं विकसित भारत का आधार

उन्होंने आगे कहा, विकसित भारत का बहुत बड़ा आधार है, भारत की सशक्त महिलाएं। महिलाओं को सशक्त करने के लिए बहुत जरूरी है कि उनकी जिंदगी से हर प्रकार की मुश्किलें कम हों। इसलिए हम माताओं-बहनों-बेटियों की जिंदगी को आसान बनाने के लिए अनेक काम कर रहे हैं। हमने महिलाओं के लिए करोड़ों शौचालय बनवाए, ताकि उन्हें खुले में शौच की मजबूरी से मुक्ति मिले। हमने पीएम आवास योजना के अंतर्गत पक्के घर बनवाए और इसमें ये भी ध्यान रखा कि जो घर हो सके तो महिलाओं के नाम पर हो। महिला जब घर की मालकिन होती है, तो उसकी आवाज का भी वजन बढ़ जाता है।

मुफ्त राशन योजना चला रही सरकार

प्रधानमंत्री ने कहा, केंद्र सरकार आज मुफ्त राशन की योजना भी चला रही है। इस योजना ने हर मां को, इस चिंता से मुक्ति दिलाई है कि आज घर में बच्चों का पेट कैसे भरेगा। महिलाओं की आमदनी बढ़ाने के लिए हम उन्हें लखपति दीदी, ड्रोन दीदी और बैंक सखी भी बना रहे हैं। ये सारी योजनाएं माताओं-बहनों की सेवा का एक बहुत बड़ा महायज्ञ है। आज इस कार्यक्रम में मैं आपको ये भरोसा देता हूं कि आने वाले महीनों में बिहार की एनडीए सरकार इस अभियान को और तेज करने जा रही है। उन्होंने आगे कहा, हमारी सरकार के लिए मां की गरिमा, उसका सम्मान, उसका स्वाभिमान बहुत बड़ी प्राथमिकता है। मां ही तो हमारा संसार होती है, मां ही हमारा स्वाभिमान होती है। उन्होंने कहा, बिहार में कुछ दिनों पहले जो हुआ, उसकी मैंने कल्पना भी नहीं की थी। बिहार में राजद-कांग्रेस के मंच से मेरी मां को गालियां दी गईं। ये गालियां सिर्फ मेरी मां का अपमान नहीं हैं। ये देश की मां-बहन-बेटी का अपमान है। पीएम मोदी ने कहा, मुझे पता है कि आप सबको भी ये देखकर और सुनकर कितना बुरा लगा है। मैं जानता हूं कि इसकी जितनी पीड़ा मेरे दिल में है, उतनी ही तकलीफ मेरे बिहार के लोगों को भी है। इसलिए, आज जब इतनी बड़ी तादाद में बिहार की लाखों माताओं-बहनों के दर्शन मैं कर रहा हूं, तो आज मेरा मन और मैं अपना दुख आपसे साझा कर रहा हूं। ताकि आप माताओं-बहनों के आशीर्वाद से मैं इसे झेल पाऊं।

मैंने हर देश के लिए पूरी मेहनत से किया काम

उन्होंने कहा, मैंने हर दिन, हर क्षण अपने देश के लिए पूरी मेहनत से काम किया है और इसमें मेरी मां की बहुत बड़ी भूमिका रही है। मुझे मां भारती की सेवा करनी थी... इसलिए, मुझे जन्म देने वाली मेरी मां ने मुझे अपने दायित्वों से मुक्त कर दिया था। उस मां के ही आशीर्वाद से मैं चल पड़ा था। इसलिए, मुझे आज इस बात की पीड़ा है कि जिस मां ने मुझे देशसेवा का आशीर्वाद देकर भेजा, खुद से अलग करके मुझे जाने की इजाजत दी। मोदी ने कहा, आप सब जानते हैं कि अब मेरी मां का शरीर तो इस दुनिया में नहीं है। कुछ समय पहले 100 साल की उम्र पूरी करके, वो हम सबको छोड़कर चली गईं। मेरी उस मां को जिसका राजनीति से कोई लेना-देना नहीं है, जिसका शरीर भी अब नहीं है। मेरी उस मां को राजद-कांग्रेस के मंच से भद्दी-भद्दी गालियां दी गईं। ये बहुत ही दुख, कष्ट और पीड़ा देने वाला है। उस मां का क्या गुनाह है कि उसे भद्दी गालियां सुना दी गईं।